॥ ओ३म्॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

अनमोल वचन

परऋणा सावीरध मत्कृतानि माहं राजन्नन्य कृतेन भोजम्।

हे परमपिता ! मुझे ऋण से मुक्ति प्रदान करो।
मैं दूसरे से अर्जित धन का भोग न करूँ।

वर्ष ३२, अंक ३४ एक प्रति : ३ रुपये
सोमवार १४ सितम्बर, २००९ से २० सितम्बर, २००९ तक
विक्रमी सम्वत् २०६६ दयानन्दाब्द : १८६
सृष्टि सम्वत् १९६०८५३१०९ वार्षिक : १५० रुपये
फैक्स : २३३४३७३७ ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
Website : www.delhisabha.com पृष्ठ सं १ से ८ तक

सार्वदेशिक सभा के 100वें स्थापना वर्ष के उपलक्ष्य में

सार्वदेशिक सभा शताब्दी महासम्मेलन सम्पन्न

31 अगस्त, 1909 को आर्यसमाज के मूर्धन्य नेताओं ने विचार पूर्वक जिन उद्देश्यों से एक सभा की स्थापना की थी, उस सभा को, जिसका नेतृत्व स्वामी श्रद्धानन्द, महात्मा नारायण स्वामी, घनश्याम सिंह गुप्त, पं. गंगा प्रसाद, इन्द्र विद्या वाचस्पति, स्वामी ध्रुवानन्द, स्वामी आनन्द बोध सरस्वती, आदि महान पुरुषों ने किया है, जिस सभा ने वर्तमान तक 24 अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलों का आयोजन सफलतापूर्वक किया है, जिस सभा ने हिन्दी सत्याग्रह, गौरक्षा आन्दोलन, हैदराबाद सत्याग्रह, सिन्ध सत्याग्रह, सत्यार्थ प्रकाश पर प्रतिबन्धों का विरोध, आदि न जाने और कितने आन्दोलनों का नेतृत्व किया है, जिस सभा के अन्तर्गत महर्षि दयानन्द जन्म शताब्दी – मथुरा, महर्षि दयानन्द अर्घ निर्वाण शताब्दी – अजमेर, आर्यसमाज स्थापना शताब्दी – दिल्ली, सत्यार्थ प्रकाश शताब्दी उदयपुर, मीनाक्षीपुरम् आर्य महासम्मेलन, आदि वृहद समारोह आयोजित किए हैं, जिस सभा ने फीजि, सूरीनाम, मॉरीशस, यूरोप, द. अफ्रीका, न्यूजीलैंड, सिंगापुर, अमेरिका आदि देशों में प्रचारक भेजकर वहां पर आर्यसमाज के संगठन को खड़ा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जिस सभा ने लाखों की संख्या में आर्यसमाज का साहित्य प्रकाशित कर जन–जन तक पहुंचाया, सत्यार्थ प्रकाश का अनेक भाषाओं में अनुवाद करने तथा प्रकाशित करने में जिसकी महत्वपूर्ण भूमिका रही, सारे भारत के सभी प्रान्तों तथा विदेशों की आर्य प्रतिनिधि सभाओं को समय–समय पर दिशा निर्देश देकर अपनी अनेक समितियों के माध्यम से अनेक विषयों में एकरूपता लाने का महत्वपूर्ण दायित्व निभाया, उसी सभा की स्थापना के 100 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर विशाल शताब्दी अधिवेशन एवं महासम्मेलन भारत की राजधानी दिल्ली में अत्यन्त उत्साहपूर्वक, उल्लासपूर्वक, नई योजनाओं की स्वीकृति, घोषणा, निर्णयों, एवं आर्यजनता से अपील के साथ 29–30 अगस्त, 2009 को सम्पन्न हुआ। दिनांक 29 अगस्त, 09 को प्रातः काल यज्ञ से आरम्भ हुए इस दो दिवसीय कार्यक्रम का समापन 30 अगस्त की दोपहर दो बजे इस भावना को लेकर समाप्त हुआ कि नई सदी में नए उत्साह, नई योजना, नई उमंग, नए कार्यक्रम, नई दिशा, नई युवा पीढ़ी के साथ एक सचेत, सुव्यवस्थित, सजग, सुन्दर, आर्यसमाज का निर्माण करने का दायित्व सार्वदेशिक सभा अवश्य ग्रहण करेगी तथा उसको पूर्ण करने का दायित्व और संकल्प हर उस आर्यजन का होगा जो किसी न किसी रूप में सार्वदेशिक सभा का अंग है।

संस्कृत अकादमी, दिल्ली सरकार द्वारा महर्षि दयानन्द सरस्वती को समर्पित द्वि दिवसीय विद्वत् संगोष्ठी सम्पन्न – रिपोर्ट अगले अंक में

सार्वदेशिक के निर्देशन में दिल्ली सभा द्वारा पूर्वोत्तर में लगा पहली बार वैदिक साहित्य का स्टॉल

शिलाँग पुस्तक मेला सम्पन्न : अंग्रेजी में वैदिक साहित्य की भारी मांग

पूर्वोत्तर के प्रत्येक राज्य में स्थाई वैदिक साहित्य प्रचार केन्द्र खोले जाएंगे

इन्दौर पुस्तक मेला 12–20 सितम्बर : स्टाल का चीफ जस्टिस श्री वीडी ज्ञानी ने किया उद्घाटन

वैदिक साहित्य को जन–जन तक पहुंचाने का सर्वोत्तम साधन पुस्तक मेला – चीफ जस्टिस वी डी ज्ञानी, (से.नि.)

वैदिक साहित्य प्राप्त करने के लिए लोगों में अत्यधिक उत्साह

वैदिक साहित्य के प्रचार–प्रसार के लिए अगले पुस्तक मेले भी लक्ष्य बनाए गए

चण्डीगढ़ (3–11 अक्तूबर), लखनऊ (7–15 अक्तूबर) तथा मैसूर (14–22 नवम्बर)

19वें विश्व पुस्तक मेले – प्रगति मैदान में भी प्रचार स्टाल बुक कराया गया

1. शिलाँग पुस्तक मेले के अवसर पर लिया प्रचार स्टाल का एक चित्र।

2. इन्दौर पुस्तक मेले में भागीदारी के लिए कार्यकर्ताओं श्री अशोक गुप्ता एवं सहयोगियों को रवाना करते सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री प्रकाश आर्य, दिल्ली सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य, आर्यवीर दल के प्रचार मन्त्री श्री बृहस्पति आर्य, एवं श्री जितेन्द्र भाटिया।

दर्शन व्याख्या - 14

अनुमान प्रमाण

गतांक से आगे :–

अनुमान प्रमाण : वह ज्ञान जो प्रत्यक्षपूर्वक हो अर्थात् जिस ज्ञान को पहले कहीं प्रत्यक्ष किया गया हो और कालान्तर में उसी के सम्बन्ध से उसकी अनुमिति की जाए तो उसे 'अनुमान' प्रमाण कहेंगे। ऋषि वर दयानन्द के शब्दों में, जो प्रत्यक्षपूर्वक अर्थात् जिसका कोई एक देश वा सम्पूर्ण द्रव्य किसी स्थान वा काल में प्रत्यक्ष होने से अदृष्ट अवयवी का ज्ञान होने को अनुमान कहते हैं। जैसे पुत्र को देख के पिता, पर्वतादि में धूम को देख के अग्नि, जगत् में सुख–दुःख देख के पूर्वजन्म का ज्ञान होता है। (सत्यार्थ प्रकाश, तृ.स.पृ. 38–39) स्पष्ट शब्दों में अनुमान में एक अवयवी तो प्रत्यक्ष होता है और दूसरा अप्रत्यक्ष (अदृष्ट), जिसका अनुमान 'तत्पूर्वक 'अर्थात् पूर्व प्रत्यक्ष किये गये के आधार पर किया जाता है–'अथ तत्पूर्वकं त्रिविधमनुमानं पूर्ववच्छेषवत्सामान्यतां दृष्टञ्च।' (न्याय 1–1–5) यह (अनुमान) तीन प्रकार का है – पूर्ववत्, शेषवत् और सामान्यतोदृष्ट।

1. पूर्ववत्: जहां कारण को देखकर कार्य का अनुमान होता है, उसे पूर्ववत अनुमान कहते हैं, जैसे बादलों को देखकर वर्षा का अनुमान लगाना।

2. शेषवत्: जहां कार्य को देखकर कारण का अनुमान लगाया जाए, जैसे बाढ़ को देखकर वर्षा का, पुत्र को देख कर पिता का, सृष्टि को देखकर उसके अनादि कारण प्रकृति और ईश्वर का।

3. सामान्यतोदृष्टः किसी एक स्थान पर दो वस्तुओं के पारस्परिक सम्बन्ध को देखकर उनमें से किसी एक को अन्यत्र देखकर दूसरी का अनुमान करना 'सामान्यतो दृष्ट' कहलाता है। उदाहरण के लिए धुएँ को देखकर आग का अनुमान लगाना (यत्र यत्र धूमस्तत्र तत्र वाह्निं) कारण यह कि व्यक्ति ने रसोईघर, यज्ञशाला आदि में धुएं और आग को एक साथ देखा है, अतः उन्नत पर्वतों, वनादि में धुएं को देखकर यह अग्नि का अनुमान लगा लेता है और इस प्रकार का अनुमान लगाना 'सामान्यतो दृष्ट' अनुमान है। यों भी अनुमान शब्द का तो अर्थ ही यही है –प्रत्यक्ष के पश्चात् उत्पन्न होनेवाला ज्ञानः 'प्रत्यक्षस्य पश्चान्मीयते ज्ञायते येन तदनुमानम्'। सामान्यतो दृष्ट अनुमान के दो भेद हैं – 1. स्वार्थानुमान 2. परार्थानुमान। पदार्थ के यथार्थ ज्ञान के लिए व्यक्ति द्वारा स्वयं अनुमान करना स्वार्थानुमान है और जब अन्यों को समझाने के उद्देश्य से अनुमान प्रमाण का प्रयोग करता है तो वह परार्थनुमान कहलाता है।

– डॉ. सुन्दर लाल कथूरिया (डी.लिट्),
बी–3/79, जनकपुरी, न.दिल्ली–110058 क्रमशः

देववाणी : संस्कृत

सर्वचिकित्सापद्धतीनाम् आयुर्वेदत्वम्

गत अंकेन क्रमशः

1– स्नेहनम् 2– स्वेदनम्। स्वेदनं तु शोधनमेव किन्तु स्नेहनं शरीरांगानां सहनशक्तिवर्धनाय भवति। पनुः संशमनं भवति। संशमने षट कर्माणि भवन्ति। तद्यथा 1– रूक्षणम् 2– स्नेहनम् 3–लंघनम् 4– बृंहणम् 5– स्वेदनम् 6– स्तम्भनम् एतेषु कर्मसु सर्वाः चिकित्साः समाहिताः भवन्ति।

तत्र द्रव्यगुणविज्ञानमजि आदर्शभूतिमस्ति, प्रत्येकं द्रव्यं नानाप्रकारेण गृहीतं भवति। तद्यथा –

1– नाम 2– रूपम् 3– गुणः 4– बृहणम्
5– वीर्यम् 6– विपाकः 7– प्रभावः 8– योगः
9– प्रयोगः 10 – संयोगः 11– कल्पः इत्यादि।

द्रव्यगुणविज्ञानस्य क्षेत्रम् अतिविशालम् अस्ति। अतः उच्यते–
यद्येकतस्तुलायां सर्वागाणि प्रतिष्ठितानि स्युः।
तेभ्यश्चापि समेभ्यो द्रव्यगुणं स्याद् गरिष्ठं तत्।
आयुर्वेदज्ञाः स्वाभिमानपूर्वकं घोषयन्ति स्म।
उत्पत्स्यते च मम कोऽपि समानधर्मा।
कालो ह्यं निरवधिर्विपुला च पृथ्वी।। इति

आयुर्वेदस्य अष्टाावंगानि संसारस्य सर्वचिकित्यापद्धतिषु शीर्षस्थानि सन्ति। तत्र – **1– शल्यम् शल्यं नाम –** विविधतृणकाष्ठपाषाणपांशुलोहलोष्टास्थि बालनख–पूयास्रावदुष्टव्रणान्तर्गर्भ शल्योद्धरणार्थम् यन्त्रशस्त्रक्षाराग्नि प्रणिधान व्रणविनिश्चयार्थ च।

2– शालाक्यं नाम– ऊर्ध्वजत्रुगतानां श्रवणनयनवदनघ्राणादिसंश्रितानां व्याधीनामुपशमनार्थम्।

3– कायचिकित्सा नाम– सर्वागसंश्रितानां व्याधीनां ज्वररथ्तपित्शोषोन्मादाप स्मारकुष्ठ मेहातिसारदीनाम् उपशनार्थम्।

4– भूतविद्या नाम– देवासुरगन्धर्वयक्षरक्षः पितृपिशाचनागग्रहाद्युपसृष्टचे तसां शान्तिकर्मबलिहरणादिग्रहोपशमनार्थम्।

– सुदर्शन 'व्रती', प्राध्यापक,
महाविद्यालय गुरुकुल आश्रम, आमसेना (उड़ीसा) क्रमशः

Questions & Answers — Effect of gems in a person

Readers are requested to send their questions to us relating to Vedas, Yoga, Yajna, Spiritual Topics and Current Affairs. Please go to **www.vedmandir.com.** You can also send them to "Arya Sandesh" Delhi Arya Pratinidhi Sabha, 15- Hanuman Road, New Delhi. - **Editor**

Q.: Wearing gems makes any changes to a persons life?

- Charan Singh Rana

Ans.: Yajurveda mantra 7è48 and similar types of several mantras of Vedas state that we, the human beings are free to do pious deeds or sins. But result thereof is already awarded by Almighty God in the shape of happiness and sorrows respectively. Everybody knows that Almighty God is supreme judge, so how a man woman or a gem can change the result of the deeds of a person. For example- God has given punishment to a person due to his sins of previous lives and the person has to face sorrows, accident etc., then how can an astrologer or gem change the award of Almighty God. Actually, due to lack of knowledge of Vedas, fundamental law of nature God has now become unknown to the innocent public, with the result, several man made worshipsrules etc., have been forced on the innocent public and in this way, the public is being devoid of money. Our country has been a land of Rishis and Munis who have never deceived people. Instead, they serve people whole heartedly and maintain overall peace. Yes, somebody can claim that he has been benefitted by wearing gem and present astrology and by following the path of false saints etc. But, it is not a reality, say Vedas. Actually, what happened that the benefit achieved by such people was the result given by God to them based on their pious deeds of previous lives. Vedas and Shastras further tell that such benefit was definite and was to be received also in the absence of adoption of the said false path. Otherwise several people adopt the false path which is against Vedas but only few get the said benefit. If the path had been true according to Vedas then everyone could get the benefit. Our pious human body has been blessed by God to achieve the true path stated in Vedas by which final liberation is attained.

To be continued....

बोध कथा

संन्यासी के लिए तीन आज्ञाएँ

– महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती

गतांक से आगे :–

माँ ने कहा– "पहली आज्ञा यह है कि जैसे तू घर में सुरक्षित होकर रहता था, वैसे ही बाहर भी रहना!"

गोपीचन्द बोले– "परन्तु यह कैसे हो सकता है माँ ? मैं अब राजा नहीं ; सिपाही और मंत्री नहीं रख सकता पहरा देने के लिए।" माँ ने कहा– "सिपाही और मंत्रियों की आवश्यकता नहीं, परन्तु स्मरण रखो कि काम,क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार के डाकू हर समय तेरे आसपास रहते हैं। उनसे बचने के लिए सत्संग का, सत् विचार का, सत् आहार का, सत् आचार का किला बनाकर रहेगा तो ये डाकू तेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकेंगे।"

गोपीचन्द ने पूछा – "और दूसरी आज्ञा?" माँ ने कहा– "यह कि यहाँ घर में तेरे लिए जिस तरह नाना प्रकार के भोजन तैयार होते थे और स्वाद से खाता था, उसी प्रकार जंगल में खाना!"

गोपीचन्द बोले– "परन्तु जंगल में ऐसा भोजन बनायेगा कौन?"

माँ ने कहा– जब तू दिन–भर परिश्रम करेगा, योगाभ्यास करेगा, तब भूख खूब चमकेगी। जो रूखा–सूखा खायेगा, उसी में तुझे रसभरे पकवानों का स्वाद आयेगा। स्वाद पकवानों में नहीं, भूख में है।" गोपीचन्द ने पूछा– "तीसरी आज्ञा?" माँ ने कहा– "घर में तेरे पास कितने ही नौकर –चाकर थे। सुन्दर झूले में झूलता था। सेवक सेवा करते थे। दासियाँ गीत गाती थीं। उनकी मघुर ध्वनि से तू गहरी नींद में सो जाता था। उसी प्रकार वन में भी गहरी नींद सोना!"

गोपीचन्द बोले– "यह कैसे होगा?"

माँ ने कहा– "जब तेरे विचार अच्छे होंगे, जब योग के आसनों से तेरा शरीर थक जायेगा, तब गहरी निद्रा आयेगी और ध्यान लगाकर मन थक जायेगा, तब गहरी निद्रा आयेगी अवश्य। नींद नौकरों के कारण नहीं आती, थकावट के कारण आती है।"

ये तीन आज्ञाएँ गोपीचन्द की माता ने उसको दीं।

मैं एक संन्यासी हूँ। आज्ञा तो नहीं दे सकता, चेतावनी दे सकता हूँ अवश्य कि यदि प्रभु दर्शन करना है, यदि शान्ति की इच्छा है और परम आनन्द की अभिलाषा है, तो मन को इस माया में फँसने नहीं देना!

मृतक श्राद्ध - एक समीक्षा

मृतक श्राद्ध बनाम पितृयज्ञ

मृतक श्राद्ध शब्द वेदों में कहीं भी नहीं है अपितु यह पीछे की कल्पनामात्र है, जिससे भोले–भाले हिन्दुओं को मूर्ख बनाकर अपनी स्वार्थ सिद्धि की जा सके। इस विचारधारा को हिन्दुओं के लिए अनिवार्य बनाने के लिए पुराणों की रचना की गई तथा रामायण, महाभारत आदि ग्रन्थों में इस विचार से संबंधित श्लोकों की रचना कर प्रक्षिप्त किया गया तथाकथित पोपों (ब्राह्मणों) द्वारा। प्रथम तो श्राद्ध शब्द जीवितों पर ही प्रयुक्त हो सकता है, मृतकों पर नहीं। क्योंकि 'श्रत्' नाम सत्य का है और जिसमें 'श्रत्' विद्यमान हो वह श्रद्धा है। अर्थात जो श्रद्धापूर्वक पितरों की सेवा की जावे उसी का नाम श्राद्ध है। सेवा जीवितों की ही हो सकती है, मृतकों की नहीं। अतः जीवितों का ही नाम पितर है, मृतकों का नहीं। पितर शब्द जीवितों के लिए ही प्रयुक्त हो सकता है मृतकों के लिए नहीं, क्योंकि हमारे लिए जो माता–पिता, भाई–बहन के सम्बन्ध हैं, वे शरीरों के साथ हैं जीवों के साथ नहीं क्योंकि 'जीव' अनादि तथा अनुत्पन्न है। गीता 2/20 के अनुसार–

न जायते म्रियते वा कदाचित्।

जीव कभी भी न पैदा होता है न मरता है। गीता 2/23 के अनुसार–

"वासांसि जीर्णानि यथा विहाय।"

अर्थात् जैसे हम पुराने कपड़ों को छोड़कर नये कपड़े पहनते हैं, वैसे ही जीव पुराने शरीर को छोड़कर नया शरीर धारण कर लेता है। जब जीव शरीर से निकलकर कर्मानुसार दूसरे जन्म में चला जाता है और शरीर को फूँक दिया जाता है फिर कौन– 'पितर' शेष रहता है? महाभारत (शान्ति पर्व अध्याय 28) के अनुसार जैसे महासागर में लकड़ियाँ आपस में मिल जाती हैं और आपस में बिछुड़ जाती हैं, वैसे ही जीवों का परस्पर समागम है। इससे सिद्ध होता है कि मरने के पीछे जीवों से माता–पिता आदि का सम्बन्ध शेष नहीं रहता। जीवितों के साथ ही माता–पिता आदि के सम्बन्ध हैं।

निरुक्त अ०4 खण्ड 11 के अनुसार – ***"पितापाता वा पालयिता वा जनयिता।"*** अर्थात् रक्षा करने वाले और पैदा करने वाले को पिता कहते हैं। ब्रह्मवैवर्त पुराण ने पाँच मनुष्यों को पिता की संज्ञा दी है–

"अन्नदाता भयत्राता पत्नी तात स्वथैव च। विद्यादाता जन्मदाता पञ्चैते पितरो नृणाम्।।"

अर्थात् अन्न देनेवाला, भय से तराने तथा जन्म देने वाल, स्त्री का पिता विद्या देने वाला इन पाँच मनुष्यों को पिता कहते हैं इन समस्त प्रमाणों से सिद्ध होता है कि पितर शब्द जीवितों के लिए ही हो सकता है, मृतकों के लिए नहीं। अतः जीवित पितरों की श्रद्धापूर्वक सेवा करने का नाम ही श्राद्ध है। वेद का एक भी मंत्र 'मृतक श्राद्ध' की पुष्टि नहीं करता। मृतक श्राद्ध के समर्थन में पौराणिकों ने कुछ श्लोक बनाकर मनु स्मृति में प्रक्षिप्त कर अवैदिक विचार थोपने का प्रयत्न किया है, जैसे–

निमन्त्रितान्हि पितर उपतिष्ठन्ति तान् द्विजान्। वायुवच्चानुगच्छन्ति तथा सीनानुपासते। *(मनु 3–189)*

अर्थात् निमन्त्रित पितर ब्राह्मणों के साथ–साथ वायुभूत होकर आते हैं और ब्राह्मणों के साथ बैठकर भोजन करते हैं। मृतकों की पितर संज्ञा होती ही नहीं तथा 'पितरलोक' नाम से कोई भिन्न स्थान नहीं है तथा पौराणिकों द्वारा मिथ्या कल्पित कोई विशेष पितर योनि नहीं है अपितु 'जीव' वर्तमान शरीर को छोड़ते ही कर्मानुसार दूसरे शरीर को प्राप्त हो जाता है। गरुड़पुराणानुसार –

यथा तृणजलौका हि पश्चात्पादं तदोद्धरेत्। स्थितिरग्र्यस्य पादस्य यथा जाता दृढा भवेत्।।

अर्थात् जैसे घास की सूँडी तभी पीछे से दूसरा पाँव उठाती है, जब अगले पावों की दृढ़ स्थिति हो जाती है, वैसे ही जब जीव शरीर छोड़ता है, उसका दूसरे शरीर से सम्बन्ध हो जाता है। ***"प्रविशेत्स नवे देहे गृहे दग्धे गृही यथा"*** अर्थात् जैसे मनुष्य घर के जल जाने पर नये घर में प्रवेश करता है वैसे ही जीव भी देह के नाश होने पर दूसरी देह धारण करता है। गरुड़ पुराण में ही प्रेतखण्ड अध्याय 3 में चार प्रकार के शरीरों का वर्णन है। ***"उद्भिजाः स्वेदजाश्चैव अण्डजाश्च जरायुजा"*** इनमें पितर या प्रेतयोनि का नाम भी नहीं है। अतः न पितरयोनि होती है और न कोई और 'पितरलोक' है और न कोई 'पितरयोनि' में जाता है। यह सब **पोप पाखण्ड** है।

जब कोई पितरयोनि ही नहीं तो फिर पितरों का निमन्त्रित होना, ब्राह्मणों के पीछे फिरना तथा उनके साथ खाना खाना ही मिथ्या सिद्ध हो गया। यदि पितर निमंत्रित ब्राह्मणों के पीछे–पीछे फिरते हैं तो उनकी बड़ी दुर्दशा होगी क्योंकि जब ब्राह्मण शौच आदि जाते होंगे तो पितरों भी को उनके पीछे–पीछे रहना पड़ता होगा।

यदि पितर भोजन करते हैं तो प्रश्न उठता है ब्राह्मणों से पहले भोजन करते हैं या पीछे अथवा साथ हों। यदि पितर पहले भोजन करते हैं तो ब्राह्मण जूठा खाते हैं और ब्राह्मण पहले भोजन करते हैं तो पितर जूठा खाते हैं। यदि दोनों साथ–साथ खाते हैं तो दोनों ही जूठा खाते हैं और यह धर्मशास्त्र के विरुद्ध है।

'नोच्छिष्टं कस्यचिद्दद्यान्नाद्याच्चैव तथान्तर।' (मनुस्मृति 2–56)

अर्थात् न किसी को जूठा देवें न किसी के साथ इकट्ठा खावें। अतः तार्किक और धार्मिक दोनों ही दृष्टिकोण से 'मृतक श्राद्ध' के नाम पर पितरों का श्राद्ध 'ब्राह्मणों को खिलाकर' करना गलत सिद्ध होता है। मनु भगवान के अनुसार पितरों को प्रसन्न करने के लिए ***"अन्नादि, उदक, दूध, मूल, फल आदि से प्रतिदिन श्राद्ध करें।"*** तो फिर केवल आश्विन के 15 दिनों में और उनमें भी एक पितर के लिए एक दिन श्राद्ध करते हैं। इन सारी मिथ्या परिकल्पनाओं से ऊपर उठकर मृतक श्राद्ध के नाम पर फैलायी है। अवैदिक परम्परा को समाप्त कर हमें वैदिक विचारधारा के अनुसार 'पितृयज्ञ' करना चाहिए, जिससे समाज और राष्ट्र को सही दिशा–निर्देश मिल सके। अब हम पितृयज्ञ की अनिवार्यता एवं परम्परा पर विचार करते हैं – ''वैदिक काल में हमारे यहाँ वर्णाश्रम व्यवस्था पूर्णरूपेण लागू थी। पौत्र होने पर अवस्था ढलने की स्थिति में लोग वानप्रस्थ लेकर वनों में जाकर स्वाध्याय, साधना, तप के द्वारा ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त कर योग साधना द्वारा मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करते थे। यही हमारे पितर हुआ करते थे, जो आषाढ़ मास प्रारंभ होने पर अपने–अपने परिजनों के परिवार में आना प्रारंभ करते थे। श्रावण मास पर्यन्त अपने ज्ञान–तप–साधना से प्राप्त वैदिक ज्ञान तथा व्यावहारिक ज्ञान का प्रवचन अपने परिजनों के बीच करते थे। ताकि अपने–अपने पितरों द्वारा प्राप्त ज्ञान को जीवन में धारण कर अपने जीवन दिशा और दशा सुधारते थे। समाज और राष्ट्र के कल्याण के लिए पुरुषार्थ किया करते थे। समाज और राष्ट्र के कल्याण के लिए पुरुषार्थ किया करते थे। श्रावण पूर्णिमा के दिन विशाल महायज्ञ के साथ ही ज्ञान यज्ञ की वार्षिक पूर्णाहुति के साथ ही सभी भद्रता को प्राप्त होते थे। 'भाद्रपद' मास तक पितर लोग परिवार और समाज की समीक्षा करते थे कि इनमें कितनी भद्रता आयी है? फिर आश्विन मास के प्रथम पक्ष में पितरों की विदाई हुआ करती थी, जिसे 'पितृपक्ष' संज्ञा प्रदान की जाती थी। विदाई में पितरों को भोजन के अतिरिक्त वर्ष भर के लिए वस्त्र, छाता, जूता, खाट, गद्दे आदि देकर विदा करते थे। वास्तवितक 'पितृयज्ञ' इसी प्रकार हमारे सम्पर्ण आर्यावर्त में हुआ करता था। आज इस वैदिक स्वरूप को "मृतक श्राद्ध एवं पितरपक्ष" का नाम पर पोप पाखण्डियों ने लूट मचा रखाी है। हमें इन पोप पाखण्डियों से सावधान रहकर मृतक श्राद्ध को छोड़ सही मायनें में जीवित पितरों की सेवा कर 'पितृयज्ञ' के द्वारा पितरों के प्रति श्रद्धा रखकर पितरों का सम्मान करना तथा दिशा भ्रमित लोगों को भी सच्चे 'पितृयज्ञ' के प्रति प्रेरित करना हमारा परम कर्त्तव्य बनता है। समाज में व्याप्त मृतक श्राद्ध जैसी वैचारिक प्रदूषणों को छुड़वाकर वैदिक पितृयज्ञ को मानना मानवाना हम सभी का उत्तरदायित्व व परम कर्त्तव्य है ताकि सत्य को ग्रहण कर यथा असत्य को त्यागकर हम तथा असत्य को त्यागकर हम सभी प्रत्तषि–ऋण से उऋण हो सके।

– आचार्य उमा शंकर शास्त्री,
आर्य सदन, भागीरथी पथ,
पुरानी बाजार, तेघड़ा,
बेगूसराय– 851133 (बिहार)

ब्रह्म-सूत्र द्वितीय अध्याय-द्वितीय पाद (45)

विप्रतिषेधाच्च ।। 45।।

अर्थ – (विप्रतिषेधात्) विशेष रूप से प्रतिषेध से (च) भी।

भावार्थ– सूत्रकार कहते हैं इस पाद के आरंभ में ईश्वर के विरोध मतों का प्रतिषेध यानी खंडन किया गया था। वहां बताया था कि चेतन के सहयोग के विना प्रकृति स्वतः जगत् के रूप में परिणत नहीं हो सकती। वहां इस बात का भी निषेध किया गया था कि चार प्रकार के परमाणुओं से जगत् स्वतः उत्पन्न हो जाता है और इसके लिए ब्रह्म की प्रेरणा आवश्यक नहीं होती। अथवा यह कहना कि परमाणुओं का समुदाय ही जगत् है – इसका प्रतिषेध भी इस पाद के मध्य में किया गया है। जगत् अभाव मात्र है और केवल ब्रह्म की सत्ता भी ब्रह्म के वास्तविक दोष रहित–स्वरूप को सिद्ध करने में सहायक नहीं है इसका खंडन भी पाद के मध्य भाग मे ही किया है। अंत में ब्रह्म के शरीरी होने का प्रतिषेध करके जीवात्मा के साथ उसके पूर्ण स्वरूप की तुल्यता का निषेध किया गया है। इस प्रकार इस पाद में विभिन्न प्रतिषेधों के माध्यम से ब्रह्म की वास्तविक स्थिति को स्पष्ट किया गया है। इससे हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि ब्रह्म जगत् का निमित्त (कारण) है। इसके विना जगत् की उत्पत्ति की व्याख्या संभव नहीं है। केवल ब्रह्म की सत्ता मानकर सृष्टि की व्याख्या संभव नहीं है। इसलिए सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी चेतन ब्रह्म के साथ जगत् के जड़ उपादान तत्व प्रकृति की सत्ता को स्वीकार कर, नित्य, चेतन जीवात्माओं के अस्तित्व को स्वीकार किया गया है। ये जीवात्मा ब्रह्म के वास्तविक स्वरूप को जानकर उस अनुपम, असीम, आनन्द की अनुमूर्ति को पाने का प्रयास करती है। इस प्रकार चेतन, सर्वज्ञादि गुणों से युक्त ब्रह्म को, नित्य चेतन जीवात्माओं को और जगत् के जड़ उपादान तत्व प्रकृति को जान लेने पर कुछ भी ज्ञातव्य शेष नहीं रहता। ब्रह्म को जानकर उसे प्राप्त कर लेना ही जीवात्मा का अंतिम लक्ष्य है।

– डॉ. भारत भूषण 'विद्यालंकार'
सी–2ए/90 जनकपुरी, नई दिल्ली–58

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा स्थापना शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में

सभा की अन्तरंग सभा बैठक सम्पन्न

सार्वदेशिक सभा की प्रथम साधारण सभा बैठक 31 अगस्त 1909 को हुई। तत्पश्चात् सार्वदेशिक सभा के कार्य नियमानुसार चल पड़े। साधारण सभा के पश्चात् सबसे अहम समिति अन्तरंग सभा कहलाती है, जो मूलतः सारे कार्यों को प्रतिपादित कहती है। शताब्दी वर्ष की साधारण सभा की पूर्व संध्या पर होने वाली अन्तरंग सभा बैठक निश्चित रूप से अपनी ही अहमियत रखती है। पूर्व निश्चित समय के अनुसार फूलों से सुसज्जित आर्यसमाज हनुमान रोड के सभागार में अन्तरंग सभा के सदस्यों की तथा विशेष आमन्त्रित सदस्यों की उपस्थिति में यह बैठक सभा के कार्यकारी प्रधान श्री आनन्द कुमार आर्य जी की अध्यक्षता में दिनांक 29 अगस्त, 2009 को सम्पन्न हुई। बैठक के आरम्भ में सभा के उपमन्त्री श्री विनय आर्य ने समस्त आगन्तुक प्रतिनिधियों का दिल्ली में होने वाली इस बैठक के लिए स्वागत करते हुए ईश्वर स्तुति प्रार्थना उपासना मन्त्रों का पाठ आरम्भ किया तथा बैठक संचालन के लिए सभा मन्त्री श्री प्रकाश आर्य जी से निवेदन किया।

श्री प्रकाश आर्य जी ने सर्वप्रथम शोक प्रस्ताव रखे। तत्पश्चात् गत बैठक की कार्यवाही की सम्पुष्टि की गई। उन्होंने कहा कि हमें आज के इस ऐतिहासिक अवसर पर आर्यसमाज के भविष्य को लेकर कुछ महत्त्वपूर्ण निर्णय लेने चाहिएं, ताकि इस बैठक को इतिहास में याद रखा जा सके। तत्पश्चात् इनके प्रस्ताव विचारोपरान्त स्वीकृत किए गए, जिनमें मुख्य रूप से आगामी 20–25 वर्षों के लिए योजना बनाने के लिए समिति का गठन, भजनोपदेशक विद्यालय, वैदिक सन्दर्भ पुस्ताकलय, मुकद्मा अभिलेखागार, समस्त आर्यजगत् से अपील, सार्वदेशिक सभा की वर्तमान समस्या के सम्बन्ध में तीन जजों की समिति के कार्यों की प्रक्रिया को पूर्ण समर्थन, आदि प्रस्ताव सम्मिलित थे।

125वें निर्वाण वर्ष के अवसर पर बनाई गई योजना के अनुमानन हेतु समस्त कार्य कार्यर्त्ताओं को धन्यवाद दिया गया। इस सम्बन्ध में इस वर्ष किए गए कार्यों को लेकर महाशय धर्मपाल जी का विशेष आभार व्यक्त किया गया।

मथुरा महासम्मेलन को सफल बनाने के लिए अपील की गई। अन्त में इन सब विषयों को साधारण सभा के समक्ष रखने के लिए पूर्ण प्रस्ताव तैयार करने की बात कही गई। बैठक में अनेक प्रान्तों के अधिकारी तथा अन्तरंग सभा सदस्य उपस्थित थे। आचार्य बलदेव जी ने अपना आशीर्वाद इस अवसर पर दिया और आने वाले समय को लेकर कुछ प्रेरणाएं भी दीं।

अन्त में सभा अध्यक्ष श्री आनन्द कुमार आर्य जी ने सभा में पारित किए गए विषयों को लेकर क्रियान्वयन करने हेतु संकल्प व्यक्त किया तथा सभी उपस्थित सदस्यों का धन्यवाद किया। शान्ति पाठ के साथ बैठक सम्पन्न हुई।

आर्य वीर दल (दिल्ली प्रदेश) के तत्त्वावधान में

नैनीताल भ्रमण कार्यक्रम सम्पन्न

आर्यवीरों की निरन्तर व्यस्तताओं एवं उनके उत्साह के दृष्टिगत् इस वर्ष का 'ग्रीष्मकालीन भ्रमण कार्यक्रम' श्री सुन्दर आर्य (महामंत्री) के नेतृत्व में 14 से 16 अगस्त तक नैनीताल में सम्पन्न हुआ। इस शिविर में 15 आर्यवीरों जिनमें सर्वश्री सुन्दर आर्य (महामंत्री), अभिनव आर्य, आदित्य आर्य, दिनेश आर्य, अमर आर्य, बलवान आर्य, विजय शास्त्री, वैभव आर्य, राकेश आर्य, जितेन्द्र आर्य, मनोज आर्य, हरिवेश आर्य, पुनीत आर्य, आजाद आदि आर्यवीरों ने अत्यन्त उल्लास एवं उत्साह से भाग लिया।

14 अगस्त को सुबह नैनीताल पहुँचे आर्यवीरों के ठहरने की व्यवस्था आर्य समाज नैनीताल की ओर से थी। इसी व्यवस्था के अन्तर्गत मुख्य रूप से कार्यक्रम में आचार्य रामचन्द्र जी का प्रत्येक दिन सायं 4.00 से 6.00 बजे तक का बौद्धिक रहा। जिसमें उन्होंने अत्यन्त सूक्ष्मता के साथ सभी आर्यवीरों को सत्यार्थ प्रकाश के ज्ञान से अवगत कराया। इस कड़ी में 'सत्यार्थ प्रकाश का अर्थ' आर्ष ग्रन्थ से अभिप्रायः 'सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका' सत्यार्थ प्रकाश की समग्रता एवं इस महान ग्रन्थ की उपयोगिता पर गहनता से प्रकाश डाला। सभी आर्यवीरों की दैनिक गतिविधि एवं भ्रमण नैनीताल आर्य समाज में प्रायः 6.30 बजे होने वाले यज्ञ से प्रारम्भ होती थी तत्पश्चात् आर्यवीर सामूहिक भ्रमण के लिए स्वतंत्र थे।

इस दौरान पहाड़ की चोटी पर विभिन्न साहसिक भ्रमण, प्राकृतिक सौन्दर्य एवं केव गार्डन की दुर्लभ गुफाओं से होकर आर्यवीरों ने अपने साहस का निरन्तर परिचय दिया, जिसमें नैनी झील का नौकायान प्रमुख रहा। यहीं नहीं इस यात्रा के बीच सभी आर्यवीरों ने दल एवं समाज के प्रति चिंतनकर भविष्य में अपने उत्तरदायित्व को निभाने का संकल्प लिया।

यात्रा की समाप्ति पर 16 अगस्त को सायं नैनीताल से चलकर 17 अगस्त को सभी आर्यवीर दिल्ली पहुँचे। इस सन्दर्भ में सभी आर्यवीरों का उत्साह, अनुभव एवं भविष्य को लेकर एक जागरुकता स्मृति पटल पर अंकित थीं। साथ ही आर्यवीरों ने भ्रमण कार्यक्रम के लिए दल का धन्यवाद किया एवं आगे भी ऐसे कार्यक्रम आयोजित किये जाते रहें। इसके लिए प्रेरित किया।

– बृहस्पति आर्य, प्रचार मन्त्री

सम्पादकीय

परमपिता परमात्मा व आगन्तुक महानुभावों का हार्दिक धन्यवाद

परमपिता परमात्मा की कृपा और आप सबके सहयोग–पुरुषार्थ से प्रकृति की प्रतिकूलता के बावजूद सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की स्थापना के 100 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में आयोजित सार्वदेशिक सभा शताब्दी अधिवेशन एवं महासम्मेलन दिनांक 29–30 अगस्त, 2009 को अत्यन्त हर्ष एंव उत्साह के साथ भारत के कोने–कोने से पधारे 5–6 हजार आर्यजनों प्रतिनिधियों, कर्मठ कार्यकर्त्ताओं एवं सदस्यों की उपस्थिति में रघुमल आर्य कन्या सी. सै. स्कूल, राजा बाजार, नई दिल्ली–1 में सम्पन्न हुआ।

दिनांक 30 अगस्त का विशाल समारोह नई दिल्ली के रामलीला मैदान नई दिल्ली में अयोजित होना था। विशाल पण्डाल, भव्य यज्ञशाला, भव्य द्वार, भोजन व्यवस्था, बैक ड्रॉप आदि सब कुछ तैयार हो चुका था – आर्यवीर दल दिल्ली ने जिस प्रकार की ध्वजारोहण की व्यवस्था की थी, उसको अब केवल सोचा ही जा सकता है। यदि, यह विशाल आयोजन रामलीला मैदान में होना सम्भव होता तो सम्भवतः ये आयोजन 2006 के रोहिणी के महासम्मेलन के बाद सबसे बड़ा आयोजन होता। खैर, ईश्वरीय व्यवस्था को कोई बदल नहीं सकता। मन दुःखी भी है – पर शायद ये मन स्वार्थी है, केवल अपना ही स्वार्थ देखता है। राष्ट्र को इस समय वर्षा की बहुत आवश्यकता है, सो हम परमात्मा को अपार वर्षा के लिए धन्यवाद भी करते हैं। ये आयोजन स्मृति में अधिक समय नहीं रहता, शायद परमात्मा की इस दया के कारण यह हमेशा याद रहेगा।

खैर, मौसम प्रतिकूल होने के कारण आनन–फानन में कार्यक्रम स्थल में परिवर्तन करना पड़ा, जिससे बहुत से आर्यजनों को कुछ दिक्कतें भी हुईं। विद्यालय का स्थान छोटा होने के कारण अनेक स्थानों – सोनीपत, पानीपत, गुड़गांव, फरीदाबाद आदि शहरों से चलने वाला 40–50 बसों को तथा गुरुकुलों, आश्रमों एवं सभा के विद्यालयों को बसें लाने से मना करना पड़ा। यदि यह सब परिस्थितियां न होतीं तो समारोह की रौनक ही कुछ और होती।

सारे भारत से आर्यजन अपने सहयोगियों एवं पारिवारिक जनों के साथ रात्रि से जारी वर्षा में भी पधारे, इसके लिए हम सब आगन्तुक महानुभावों का हार्दिक धन्यवाद करते हैं तथा समारोह की सफलता के लिए आपको शुभकामनाएं प्रेषित करते हैं।

– विनय आर्य, महामन्त्री

महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन पर आधारित

डोकोड्रामा चलचित्र का लोकार्पण व उद्घाटन सम्पन्न

महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन पर आधारित डोकोड्रामा चलचित्र पूर्ण कर लिया गया है, जिसे आर्य समाज के इतिहास पर विशेष शोधकर्ता/फिल्मकार एवं दिग्दर्शक श्री सुभाष अग्रवाल जी द्वारा इसका निर्माण किया गया है। इसके संवाद आर्य समाज के वैदिक विद्वान, जिन्हें महर्षि के जीवन चरित्र पर पूर्ण अंतिम शोधकर्त्ता कहा जाता है, श्री डॉ. भवानी लाल भारतीय द्वारा संशोधित एवं प्रणाणित किए गए हैं। इस डोकोड्रामा चलचित्र का पहला उद्घाटन चित्रण एवं लोकार्पण समारोह का कार्यक्रम रविवार 13 सितम्बर, 09 को लुधियाना स्थित बी.सी.एम. आर्य मॉडल सीनियर सेकेण्डरी स्कूल, शास्त्रीनगर के स्वामी दयानन्द हॉल में अपराह्न 2.30 बजे से सायं 5 बजे तक किया गया। इस चलचित्र का लोकार्पण एवं उद्घाटन आर्य समाज के भीष्म पितामह एवं टंकारा ट्रस्ट के प्रधान/मैनेजिंग ट्रस्टी महात्मा सत्यानन्द जी मुंजाल द्वारा किया गया।

– रामनाथ सहगल, मन्त्री

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा स्थापना शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की साधारण सभा बैठक सम्पन्न

> **सार्वदेशिक सभा विवादों से अधिक आर्यसमाज के लिए आवश्यक भविष्य की योजनाओं को क्रियान्वित करने की अपनी जिम्मेदारी समझती है इसीलिए गत तीन वर्षों में देश विदेश में विशाल सम्मेलनों का आयोजन किया और नई योजनाओं के क्रियान्वयन और सोच लेकर एक परिपक्व रणनीति बनाने की दिशा में कार्य करेगी।**
>
> *— कै. देवरत्न आर्य, प्रधान, सार्वदेशिक सभा*

निश्चित रूप से यह एक ऐतिहासिक अवसर था। विश्व की एक विराट संस्था जिसकी शाखाएं अनेक देशों में तथा भारत के हजारों नगरों में फैली हैं, की

> **गौहत्या राष्ट्र के माथे पर अभी भी कलंक - आर्यसमाज को इसके लिए सशक्त भूमिका निभानी होगी**
>
> **—आचार्य बलदेव, प्रधान, हरियाणा सभा**

प्रशासनिक संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की स्थापना के 100 वर्ष पूर्ण हो रहे थे। जिन प्रान्तों के प्रतिनिधियों से मिलकर इस सभा का निर्माण होता है, उन प्रान्तों की प्रान्तीय

> **जम्मू—कश्मीर (श्रीनगर) की सम्पत्तियों को अनधिकृत कब्जे से बचाना सार्वदेशिक सभा की प्राथमिकताओं में सम्मिलत हो।**
>
> **—भारतभूषण गुप्ता, प्रधान, जम्मू—कश्मीर, सभा**

आर्य प्रतिनिधि सभाओं के सम्मानित प्रतिनिधियों के मनों में एक अलग ही उल्लास था। आर्यसमाज का प्रतिष्ठित विद्यालय– रघुमल आर्य कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, राजा बाजार,

> **आर्यसमाज की सम्पत्तियों को सुरक्षित करने के लिए कारगर योजना की आवश्यकता**
>
> **—धर्मपाल आर्य, प्रधान, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली**

कनॉट प्लेस, नई दिल्ली का विशाल सभागार इस ऐतिहासिक अवसर के लिए पूर्ण रूप से तैयार था। सुन्दर होर्डिंग, फूलों की सजावट तथा चन्दन

> **प्रान्तीय सभाओं का सार्वदेशिक सभा के साथ सम्बन्ध संगठन हेतु अहम् कड़ी —सुरेशचन्द्र अग्रवाल, प्रधान गुजरात सभा**

और खुशबू की लहरियों से पूरा सभागार महक रहा था। दिल्ली सभा के अधिकारी सभी प्रतिनधियों का गर्मजोशी से स्वागत कर रहे थे। तथा सभी का चन्दन का तिलक लगाकर तथा पीत वस्त्र पहनाकर स्वागत किया जा रहा था।

> **आदिवासी अंचलों में दयानन्द सेवाश्रम संघ के कार्यों को प्रश्रय दें सभी आर्य प्रतिनिधि सभाएं —आचार्य दयासागर, प्रधान, छत्तीसगढ़**

ठीक समय पर सभी अधिकारीगण मंच पर थे तथा प्रतिनिधियों एवं विशेष आमन्त्रित सदस्यों की गरिमामयी उपस्थिति में दीप प्रज्ज्वलन करके इस साधारण सभा का शुभारम्भ किया गया। पश्चात् ईश्वर स्तुति प्रार्थना–उपासना के मन्त्रों का पाठ हुआ। सभा की अध्यक्षता कर रहे सभा के कार्यकारी प्रधान श्री आनन्द कुमार आर्य जी ने समस्त सदस्यों का इस अवसर पर स्वागत किया। शोक प्रस्तावों के पश्चात् गत साधारण सभा बैठकों की कार्यवाही पढ़कर सुनाई गई, जिसे सभा ने ओ३म् ध्वनि के साथ पारित किया। तत्पश्चात् अन्तरंग सभा द्वारा पारित प्रस्तावों को एक–एक करके सदन के समक्ष रखा गया, जिसकी उपयोगिता और महत्त्व को समझाते हुए समस्त सदन ने उन्हें पारित किया। जो प्रस्ताव पारित किए

> **उत्तर प्रदेश में आर्यसमाज का संगठन आज भी बहुत मजबूत, सार्वदेशिक सभा के दिशा–निर्देश से उसमें अद्भुत गति एवं स्फूर्ति का निर्वाह होगा।**
>
> **—देवेन्द्र पाल वर्मा, प्रधान, उत्तर प्रदेश सभा**

गए उनकी विस्तृत भाषा अगले अंकों में विस्तृत रूप से प्रकाशित करने का प्रयत्न करेंगे। मुख्य रूप से उनके अंशों को अन्तरंग सदस्यों एवं अधिकारियों के नाम से इसी अंक के अन्य पृष्ठों में प्रकाशित किया जा रहा है।

चूँकि लगभग सभी प्रान्तीय सभाओं के प्रतिनिधि तथा मुख्य प्रान्तीय सभाओं के प्रधानों तथा मुख्य अधिकारियों ने इस अधिवेशन में अपने विचार रखे। मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित महाशय धर्मपाल जी ने बहुत संक्षिप्त रूप में अपने विचारों को रखा तथा आर्यों को प्रेरणा देते हुए जगाया और

> **आर्यों की पहचान बनाए रखने के लिए जाति सूचक शब्दों के स्थान पर आर्य लिखने का संकल्प लें सभी आर्यजन**
>
> **—भारतभूषण आर्य (पूर्वनाम त्रिपाठी)**

> **कानूनी मुकदमों का अभिलेखागार बनाने की तात्कालिक आवश्यकता पूरी करेगी सार्वदेशिक सभा।**
>
> **—विनय आर्य, महामन्त्री, दिल्ली सभा**

कहा कि उठो और अपने कार्यों पर लग जाओं – अभी बहुत–सा कार्य शेष है और सार्वदेशिक सभा के प्रति की गई

> **सार्वदेशिक सभा का महत्त्व जो स्थापना के समय था,वह अब काफी अधिक बढ़ गया है। आर्जसमाज की उम्मीदों को सार्वदेशिक सभा पूरा करने में सब विवादों के बावजूद आज भी पूर्ण सक्षम**
>
> **— प्रकाश आर्य, मन्त्री, सार्वदेशिक सभा**

सेवाओं के लिए उनका करतल ध्वनि से स्वागत भी किया। इस बैठक में मुख्य रूप से युवाओं को आर्यसमाज के साथ

> **शास्त्रार्थों की परम्परा को रूप बदल कर पुनः निर्वाह की आवश्कता**
>
> **—दीनदयाल गुप्ता, मन्त्री बंगाल सभा**

जोड़ने, अगली शताब्दी में आने वाली चुनौतियों को देखते हुए योजना बनाने में आर्यसमाज को प्रत्येक परिस्थिति के लिए परिपक्व करने, सार्वदेशिक सभा की परिधि को विदेशों में और अधिक बढ़ाने, विभिन्न भाषाई विद्वानों को तैयार करने सम्बन्धित प्रकल्प बनाने आदि के सम्बन्ध में प्रस्ताव रखे गए। सम्पत्तियों का रिकार्ड बनाने तथा आर्यसमाज का अभिलेखागार जैसे प्रस्तावों पर विचार किया गया। इसके साथ अपने नाम के

> **सार्वदेशिक सभा की प्रशासनिक क्षमता में वृद्धि करना आर्यसमाज के दीर्घकालिक हित में —गंगाप्रसाद, प्रधान, बिहार सभा**

साथ सभी आर्यजनों से आर्य लिखने की अपील की गई तथा तीन बातों – यज्ञ, यज्ञोपवीत एवं स्वाध्याय – को सभी आर्यजनों से अपने दैनिक जीवन में अपनाने की अपील भी की गई।

कैप्टन देवरत्न आर्य जी अस्वस्थता के चलते बैठक में सम्मिलित नहीं हो सके, किन्तु उन्होंने अपने भेजे सन्देश में यह निर्देश किया कि आज आर्यसमाज को विवादों से ज्यादा कार्यों की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि आर्यसमाज में विवाद तो चलते रहेंगे, किन्तु आज जो रचनात्मक कार्य आवश्यक हैं, उन्हें प्राथमिकता से किया जाए, ऐसा मेरा निवेदन है।

इस अवसर पर सर्व श्री आचार्य बलदेव (हरियाणा), ब्र0 राजसिंह आर्य (दिल्ली), धर्मपाल आर्य (दिल्ली), भारतभूषण आर्य (झारखण्ड), विनय

> **धर्मार्य सभा और न्याय सभा को मजबूत करना आने वाले समय में हमारा लक्ष्य होना चाहिए। —अमरसिंह आर्य, प्रधान, राजस्थान सभा**

आर्य (दिल्ली), सुरेश चन्द्र अग्रवाल (गुजरात), भारतभूषण गुप्ता (जम्मू—कश्मीर), दीनदयाल गुप्ता (बंगाल), देवेन्द्र पाल वर्मा (उत्तर प्रदेश), आचार्य दयासागर (छत्तीसगढ़), दलबीर सिंह राघव (मध्य भारत), गंगा प्रसाद आर्य (बिहार), डॉ. ब्रह्ममुनि (महाराष्ट्र), वाचोनिधि आर्य (गुजरात), अमर सिंह आर्य (राजस्थान), सत्यवीर शास्त्री (मध्य विदर्भ सभा), ने भी अपने विचार प्रकट किए।

समयाभाव के कारण बहुत से आर्यजनों को समय नहीं दिया जा सका। उनसे लिखित सुझाव मांगे गए, जिस पर अनेक आर्य प्रतिनिधियों ने अपने लिखित सुझाव/विचार दिए, जिनको अंकित किया गया।

आर्य प्रकाशन के संस्थापक श्री तिलक राज कोहली जी का

86वां जन्म दिवस सम्पन्न

श्री तिलक राज कोहली (आर्य) जी का 86वां जन्मदिवस दिनांक 15 अगस्त, 2009 को आर्यसमाज हनुमान रोड नई दिल्ली में बड़ी भव्यता से मनाया गया। समारोह में यज्ञ के प्रश्चात् भजन संध्या का कार्यक्रम सुप्रसिद्ध संगीतज्ञ श्री सुचित नारंग द्वारा हुआ। बधाई देने वालों में सर्वश्री महाशय धर्मपाल, स्वामी धर्ममुनि दुग्धाहारी, आचार्य आर्य नरेश, धर्मपाल आर्य, दिल्ली सभा के महामन्त्री विनय आर्य, अरुण वर्मा, राजीव आर्य तथा समस्त आर्यसमाजों के सदस्य, परिवार के सभी सदस्य थे।

श्री तिलकराज कोहली जी का जन्म 15 अगस्त, 1924 को चकझूमरा जिला लायलपुर (पाकिस्तान) में हुआ। उसके बाद स्यालकोट आ गए, उस समय हमारी स्वतन्त्रता की लड़ाई लड़ी जा रही थी, उसको उन्होंने खूब देखा। उनके चाचा श्री उधोलाल व सरदारी लाल कोहली आर्यसमाज के कार्यों में बढ़-चढ़ कर भाग लेते थे। उन्हीं से उन पर आर्यसमाज की छाप पड़ी तथा आर्यसमाज का कार्य करने लग गए। जब हैदराबाद का सत्याग्रह हुआ तो उन्होंने सत्याग्रहियों का स्वागत किया। 1947 में जब देश का विभाजन हुआ तो स्यालकोट से दिल्ली आकर बस्ती हरफूलसिंह में रहे। वहां पर श्री रामनाथ सहगल से परिचय हुआ। आप आर्यसमाज के कार्यों में खूब हिस्सा लेते रहे। आर्यसमाज मॉडल बस्ती के 2 वर्ष तक मन्त्री रहे। आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली व आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के 1960 से सदस्य हैं।

पं. देवव्रत धर्मेन्दु जी ने सत्यार्थ प्रकाश की परीक्षाओं के लिए आर्य युवक परिषद् का गठन किया तभी से उसके सदस्य हैं। लगभग 30 वर्ष से आर्यसमाज बस्ती हरफूल सिंह के मन्त्री हैं। प्रचार कार्य व साहित्य का कार्य करते हुए 1960 में आर्य प्रकाशन की स्थापना के साथ आर्य साहित्य व प्रचार सामग्री का कार्य आरम्भ किया जिसके द्वारा भारत व विदेशों की आर्यसमाजों के सम्पर्क में है और आर्य प्रकाशन करते रहे। वर्ष 2006 में चारों वेदों का हिन्दी भाष्य का प्रकाशन भी किया, वेद संहिता भी छापी तथा लगभग 400 पुस्तकों का प्रकाशन किया। वैदिक साहित्य का कार्य करते हुए देश की सारी आर्यसमाजों का भ्रमण किया तथा साहित्य का प्रचार किया। अपने परिवार में पिछले 50 वर्षों से निरन्तर वैदिक यज्ञ करते हैं जिसमें सारा परिवार बैठता है। इस समय 85 वर्ष की आयु में आर्यसमाज के कार्यों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते हैं। हम प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि वह 100 वर्ष की आयु प्राप्त करें तथा ऐसे ही सेवा कार्य करते रहें।

श्री तिलक राज आर्य जी को जन्मदिवस की बधाई देते महाशय धर्मपाल जी, स्वामी धर्ममुनि जी, श्री धर्मपाल आर्य, श्री अरुण प्रकाश वर्मा, श्री राजीव आर्य, श्री राजेन्द्र दुर्गा, श्री एस. पी. सिंह एवं सुपुत्र श्री सुभाष आर्य एवं संजीव आर्य।

वरिष्ठ पत्रकार श्री बनारसी सिंह जी की पुस्तक

अमर हुतात्मा मदनलाल ढींगरा का लोकार्पण

वरिष्ठ पत्रकार श्री बनारसी सिंह द्वारा लिखी गयी पुस्तक अमर हुतात्मा मदनलाल ढींगरा के लोकार्पण समारोह के अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए पूर्व केंद्रीय गृह राज्यमंत्री स्वामी चिन्मयानन्द सरस्वती ने ये उद्‌गार व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि आज देश के समक्ष आतंकवाद, भ्रष्टाचार तथा विषमता जैसी गंभीर समस्याएं विद्यमान हैं, जिनका निराकरण करना बेहद जरूरी है। उन्होंने कहा कि इन समस्याओं का समाधान राष्ट्र के लिए सब कुछ बलिदान कर देने की क्रांतिकारियों द्वारा प्रस्तुत भावना में निहित है और इनसे युवाओं को नयी प्रेरणा मिलेगी। स्वामी चिन्मयानन्द ने श्री बनारसी सिंह को युवाओं के लिए प्रेरक और ऐतिहासिक कार्य करने पर बधाई दी।

समारोह की अध्यक्षता विख्यात साहित्यकार पद्मश्री श्याम सिंह शशि ने की, जबकि संचालन वरिष्ठ पत्रकार अरविंद कुमार सिंह ने किया। इस कार्यक्रम का आयोजन कंचना स्मृति न्यास, दैनिक दिव्य भारत तथा आकृति प्रकाशन के तत्त्वावधान में आर्य समाज मंदिर हनुमान रोड में किया गया।

वरिष्ठ पत्रकार श्री शेष नारायण सिंह ने बनारसी सिंह के व्यतित्व और कृतित्व पर प्रकाश डालने के साथ ही पुस्तक के बारे में भी विस्तार से तथ्य रखे। पूर्व राजनायिक श्री विद्यासागर वर्मा ने भी श्री सिंह की इस रचना की सराहना की और कहा कि इससे खास तौर पर युवाओं को प्रेरणा मिलेगी।

इस अवसर पर जो प्रमुख व्यक्ति उपस्थित थे उनमें सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यकारी प्रधान श्री आनन्द कुमार आर्य, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य, आर्यसमाज हनुमान रोड के प्रधान श्री अरुणप्रकाश वर्मा, आर्यसमाज सीताराम बाजार के मंत्री श्री बाबूराम, श्री गणेशदास गोयल तथा आर्यसंदेश के व्यवस्थापक श्री सुशील महाजन श्री राजवीर सिंह तंवर भी शामिल थे। कार्यक्रम का शुभारम्भ आचार्य डा. कर्णदेव शास्त्री के द्वारा वैदिक मंत्रोच्चार से हुआ।

कृति 'अमर हुतात्मा मदनलाल ढींगरा' के लेखक श्री बनारसी सिंह को उनकी पुस्तक के लोकार्पण के अवसर पर शाल ओढ़ाकर सम्मानित करते पूर्व केन्द्रीय गृह राज्यमन्त्री स्वामी चिन्मयानन्द सरस्वती।

स्व. गोविन्द स्वामी जी की 52वीं पुण्यतिथि के अवसर पर

लालीबाई प्राइमरी स्कूल का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज गोविन्द भवन दयानन्द वाटिका राम बाग में दिनांक 24 अगस्त, 09 को स्वर्गीय श्री गोबिन्द स्वामी जी की 52वीं पुण्यतिथि पर लालीबाई बाल प्राइमरी स्कूल का वार्षिकोत्सव बड़े धूमधाम से मनाया गया। समारोह के मुख्य अतिथि महाशय श्री धर्मपाल जी (एम०डी० एच०) थे। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उप प्रधान आनन्द कुमार आर्य, विधायक श्री राजेश जैन, श्री विनय आर्य महामंत्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, निगम पार्षद श्री प्रवीण जैन, श्री सतवीर शर्मा, श्री महेश चन्द शर्मा आदि उपस्थित थे। इस अवसर पर प्राचार्या श्रीमती अनिता शर्मा के निर्देशन में छात्र-छात्राओं द्वारा सांस्कृतिक और देशभक्तिपूर्ण कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। महाशय श्री धर्मपाल जी ने इस अवसर पर बच्चों को पाश्चात्य संस्कृति से बचाने के लिए और बच्चों को संस्कारित करने के लिए अपने विचार व्यक्त किए।

सभा द्वारा संचालित लालबाई बाल प्राइमरी स्कूल के वार्षिकोत्सव के अवसर पर विद्यालय एवं समाज के अधिकारियों के साथ सभामन्त्री श्री विनय आर्य, एवं महाशय धर्मपाल जी। ➡

आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश द्वारा आर्यसमाज रानी बाग दिल्ली में

शहीद मदनलाल ढींगरा बलिदान शताब्दी समारोह सम्पन्न

मदन लाल ढींगरा से युवा प्रेरणा लें – विनय आर्य

विदेशों में भारतीयों के प्रति भेदभाव तथा अंग्रेजी साम्राज्यवाद के विरुद्ध क्रांति का शंखनाद करके महान देशभक्त मदन लाल ढींगरा ने 100 वर्ष पूर्व लंदन में आत्मबलिदान दिया। भारतीय स्वतन्त्रता सेनानियों के लिये दोषी, सर कर्जन वायली को गोली मारकर आत्म समर्पण कर दिया। मदन लाल ढींगरा का अमर बलिदान देश के युवाओं का सदैव पथ–प्रदर्शक बना रहेगा। ये उद्‌गार श्री विनय आर्य, महामंत्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिध सभा ने रानीबाग में आयोजित "शहीद मदन लाल ढींगरा बलिदान शताब्दी" पर आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश के कार्यक्रम में कहे। इस अवसर पर उन्होंने पत्रकार चन्द्रमोहन आर्य की पुस्तक "महान देशभक्त" का विमोचन भी किया।

प्रदेश संचालक श्री वीरेन्द्र आर्य ने कहा महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनुयायी श्यामजी कृष्ण वर्मा ने लन्दन में "इण्डिया हाऊस" बनाया था, जहां भारतीय छात्रों को छात्रवृत्ति व देशभक्ति के संस्कार दिये जाते थे। जिसमें मदन लाल ढींगरा, वीर सावरकर जैसे तेजस्वी क्रांतिवीर देश की आजादी के लिए अग्रसर हुए।

आचार्य इन्द्रदेव ने कहा महर्षि दयानन्द ने वेदों से प्रेरणा लेकर देशभक्ति की शिक्षा दी साथ ही चरित्र–निर्माण पर बल दिया, जो अनुकरणीय है।

आचार्य आनन्द प्रकाश , तिहाड़ जेल के प्रशानिक अधिकारी श्री सुनील गुप्ता, श्री भजन प्रकाश आर्य, चौ. चन्द्रभान (पूर्व डी. सी. पी.) श्री धर्मपाल गुप्ता, श्री रविचन्द गुप्ता, श्री विनय नारंग, श्री संजय आदि वक्ताओं ने भी अमर शहीद मदनलाल ढींगरा के 100वें शहीद दिवस पर प्रेरक विचार रखे। कार्यक्रम की अध्यक्षता समाजसेवी श्री चमन लाल महेन्द्रु ने की। कार्यक्रम में गुरुकुल व आर्य वीर दल के सैकड़ों युवाओं ने भाग लिया।

– चन्द्रमोहन आर्य, प्रेस सचिव,

महान देशभक्त पुस्तक का विमोचन करते बाएं से दाएं सर्वश्री चन्द्रमोहन आर्य, वीरेन्द्र आर्य, भजनप्रकाश आर्य, आचार्य इद्रदेव, धर्मपाल गुप्ता, चौ. चन्द्रभान, दिल्ली सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य एवं श्री सुनील गुप्ता।

सार्वदेशिक शताब्दी सम्मेलन : एक प्रतिक्रिया

दिल्ली में हाल ही में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुए सार्वदेशिक शताब्दी सम्मेलन ने आर्यजगत् में एक नए उमंग और उल्लास की लहर उत्पन्न की। भारी वर्षा के कारण रामलीला मैदान में पूर्वनियोजित कार्यक्रम रघुमल उच्च माध्यमिक विद्यालय में स्थानांतरित किया गया। इससे व्यवस्था में कुछ गड़बड़ी होना अपेक्षित तथा स्वाभाविक है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अंतरंग तथा सर्वसाधारण सभा में महत्वपूर्ण प्रस्ताव पारित हुए। कार्यकारी प्रधान श्री आनन्द कुमार आर्य ने अपने अध्यक्षीय भाषण में राष्ट्र प्रगति में आर्यसमाज का योगदान दर्शाते हुए प्रचलित ज्वलंत समस्या पर जो समसामयिक विचार प्रकट किए वह यथार्थ थे। समलैंगिता का अप्रत्यक्ष समर्थन करने वाले तथा स्वयं को 'आर्य' कहलाने वाले 'स्वामी' संन्यासी को समयोचित फटकार लगाई।

सार्वदेशिक सभा के निर्वाचन को लेकर जो विद्यमान स्थिति है उसका संतोषजनक खुलासा सम्मेलन में हुआ, जिससे सभी प्रतिनिधियों का समाधान हुआ। सार्वदेशिक के मन्त्री श्री प्रकाश आर्य, दिल्ली प्रतिनिधि सभा प्रधान ब्र. राजसिंह आर्य जी, महामन्त्री श्री विनय जी तथा उनके सभी सहयोगियों ने दूर–दूर से आए सैकड़ो प्रतिनिधियों के भोजन निवास की काफी अच्छी व्यवस्था की जिसके लिए वह धन्यवाद के पात्र हैं। समुचे आर्य–विश्व में गतिशीलता तथा उत्साह पैदा करने में शताब्दी सम्मेलन निश्चय ही सहायक रहा। सभी सम्बन्धितों को, बाहर गाँव के प्रतिनिधियों की ओर से मैं धन्यवाद देकर आभार मानता हूँ।

– प्रो. देवदत्त तुंगार, उपमन्त्री
महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
समीप कला मंदिर, नांदेड (महाराष्ट्र)

महर्षि दयानन्द सरस्वती के 125वें निर्वाण वर्ष के उपलक्ष्य में

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा

आर्यसमाज परली बैजनाथ, जिला बीड (महा.) का

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन

30 अक्तूबर से 1 नवम्बर 2009

स्थान : सरस्वती भवन, सम्भाजी पेठ, सम्भाजीनगर (औरंगाबाद)

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पधारकर सम्मेलन को सफल बनाने में अपना सहयोग प्रदान करें।

–: निवेदक :–

स्वामी श्रद्धानन्द (प्रधान) | आचार्य शिवमुनि (मन्त्री) | दयाराम बसैये (संयोजक)

डी. ए. वी. पब्लिक स्कूल, लारेंस रोड, अमृतसर की ओर से

दैनिक सत्संग में भाग लेने वाले बच्चों को छात्रवृत्तियां एवं महर्षि दयानन्द कॉमिक्स वितरित

डी. ए. वी. पब्लिक स्कूल, लारेंस रोड, अमृतसर की प्रिंसीपल नीरा शर्मा के निर्देशन में आर्य समाज लोहगढ़, अमृतसर में साप्ताहिक हवन यज्ञ का आयोजन किया गया। इस अवसर पर स्कूल के छात्र/छात्राओं ने भजन सुनाकर वातावरण को अमृतमय कर दिया। तीसरी कक्षा के बच्चों ने आर्यसमाज के दस नियम (कण्ठस्थ) सुनाकर सबका दिल जीत लिया।

गत वर्ष की भाँति इस अवसर पर आर्य युवक सभा, शक्तिनगर, अमृतसर ने उन सभी छात्र/छात्राओं को छात्रवृत्तियाँ दीं, जो स्कूल के दैनिक हवन यज्ञ में भाग लेते हैं।

इस अवसर पर प्रिंसीपल नीरा ने महर्षि दयानन्द सरस्वती एवम् महात्मा हंसराज की जीवनी तथा उनके द्वारा किए गए सामाजिक एवम् परोपकार के कार्यों के बारे में विशेष जानकारी दी। प्रिंसीपल ने धर्म, वेद, ऋषि दयानन्द जैसे धर्म और देशभक्तों व माता–पिता के प्रति हमारा कर्त्तव्य एवम् ओ३म् व गायत्री मंत्र का जाप एवम् हवन यज्ञ के वैज्ञानिक रहस्यों के बारे में बच्चों को विस्तार से बताया। मैडम ने बच्चों को जन्मदिवस पर आशीर्वाद दिया तथा उनके माता–पिता को हार्दिक बधाई दी।

स्कूल की मैनेजर प्रिंसीपल डॉ. नीलम कामरा ने बच्चों के जन्मदिवस के उपलक्ष्य पर उन सभी बच्चों को महर्षि दयानन्द सचित्र जीवनी वितरित की ताकि वह महर्षि बाल (कॉमिक्स) प्रतियोगिता में भाग ले सकें।

प्रधान चुने जाने पर बधाई

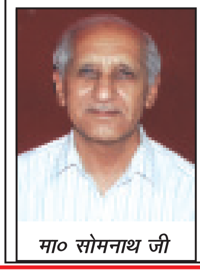

मा० सोमनाथ जी

दिनांक 26 जुलाई, 09 को आर्य विद्या मन्दिर, सैक्टर –7, गुड़गांव में सम्पन्न हुए वार्षिक साधारण अधिवेशन में मा० सोमनाथ जी को आर्य केन्द्रीय सभा गुड़गांव का प्रधान चुना गया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से मा० सोमनाथ जी एवं उनकी टीम को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

महर्षि दयानन्द के 125वें निर्वाण वर्ष के उपलक्ष्य में
आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू–कश्मीर के तत्त्वावधान में

महर्षि दयानन्द के जीवन व कृतित्व पर प्रतियोगिता

महर्षि दयानन्द के 125 वें निर्वाण वर्ष के उपलक्ष्य में 2009–10 में समस्त भारत में और विदेशों में आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू कश्मीर ने महर्षि दयानन्द की शिक्षाओं के आधार पर एक कार्यक्रम आयोजित किया। आर्यसमाज रिहाड़ी कालोनी जम्मू में महर्षि के जीवन व कृतित्व पर एक प्रतियोगिता का आयोजन किया गय, जिसमें भिन्न–भिन्न स्कूलों के 120 बच्चों ने भाग लिया। आज के सन्दर्भ में महर्षि का उपदेश वेदों का मार्ग मानव जीवन के लक्ष्य को उजागर करता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती स्त्री शिक्षा के प्रबल समर्थक थे। वे नर और नारी की समानता के समर्थक थे तथा विधवा विवाह के भी समर्थक थे किन्तु स्वामी जी बाल विवाह व सती प्रथा के विरोधी थे, ऐसा सभी वक्ताओं ने कहा। यह महर्षि दयानन्द के ही प्रबल प्रयासों का फल है कि आज भारत जैसे महान देश की राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभादेवी सिंह पाटील है। कार्यक्रम का समापन प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कारों के वितरण से हुआ। प्रधान श्री भारतभूषण गुप्ता ने स्कूल के प्रिन्सीपल व बच्चों को उनके श्रेष्ठ सेवा व समारोह में भाग लेने के लिए धन्यवाद किया।

तीन दिवसीय वेद प्रचार कार्यक्रम सम्पन्न

आर्य समाज अखनूर के कार्यक्रमों का विस्तार करने के लिए आर्य समाज अखनूर व आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू कश्मीर के संयुक्त संयोजकत्व में तीन दिवसीय कार्यक्रम (11, 12 व 13 जुलाई 09) का वेद मन्दिर, आर्य समाज अखनूर में आयोजन किया गया। कार्यक्रम का आरम्भ आचार्य विद्याभानु शास्त्री के ब्रह्मत्व में यज्ञ से हुआ, जिसमें वेदों पर आधारित प्रवचन हुए।

तीन दिवसीय कार्यक्रमों के सायंकालीन सत्र में सर्वश्री शक्ति व सतीश की पार्टी का भक्ति संगीत, योग पर रविकान्त जी का कार्यक्रम चिनाव के किनारे जियों पोटो घाट पर वैदिक प्रवचन हुए। प्रत्येक क्षेत्र से भारी संख्या में महानुभावों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया और आर्य समाज अखनूर के आयोजकों की इस कार्यक्रम को अन्तराल के बाद आयोजित करने पर भूरि–भूरि प्रशंसा की। कार्यक्रम की सफलता तथा लोगों के उत्साह को देखते हुए प्रधान श्री भारत भूषण आर्य, श्री रविकान्त गुप्ता महामंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा ने इस प्रकार के कार्यक्रम आयोजित करने के लिए अपना पूरा समर्थन देने का आश्वासन दिया। अखनूर के एक वरिष्ठ आर्यसमाजी ने अपने सहयोगियों समेत कार्यक्रम में भाग लेने वालों का धन्यवाद किया। एक अन्य वरिष्ठ आर्यसमाजी श्री देवदत्त एवं जम्मू के श्री सुभाष गुप्ता भी समस्त कार्यक्रम में उपस्थित रहे। *– भारतभूषण गुप्ता, प्रधान*

स्वामी तत्त्वबोध जी सरस्वती के पंचम पुण्य तिथि पर

महर्षि दयानन्द स्मृति एवं ईश्वर भक्ति गीत प्रतियोगिता

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास के संस्थापक अध्यक्ष पूज्य स्वामी तत्त्वबोध जी सरस्वती की पंचम पुण्य तिथि की पूर्व संध्या पर 22 जुलाई 2009 को महर्षि दयानन्द स्मृति एवं ईश्वर भक्ति पर आधारित समूह व एकल गान प्रतियोगिता श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास द्वारा माता लीलावन्ती सभागार, नवलखा महल, गुलाब बाग में आयोजित की गई। कार्यक्रम की अध्यक्षता जयपुर से पधारे न्यास के संरक्षक श्री बी.एल. अग्रवाल ने की। इस अवसर पर उन्होंने बताया कि आज हम सभी पूज्य स्वामी तत्त्वबोध जी सरस्वती को स्मरण करते हुए प्रभु भक्ति के गीतों से पिरोई हुई इस सुनहरी शाम का रसास्वादन दे रहे हैं।

इसके अतिरिक्त एकल प्रतियोगियों को एक एक हजार रु. व समूह गान टीम को दो, दो हजार रु. की राशि प्रोत्साहन के रूप में एम.डी.एच. समूह के श्री सुशील त्रेहान ने प्रदान की।

समारोह में श्री भवानी दास आर्य ने बताया कि हमें इस बात का गर्व और संतोष है कि महाराणा सज्जन सिंह जी के अतिथि गृह नवलखा महल से सर्वमेध यज्ञकर्त्ता स्मृति शेष पूज्य स्वामी तत्त्वबोध जी सरस्वती के नेतृत्व में न्यास इसे एक प्रेरक स्मारक का स्वरूप देने में सफल रहा। जो एक कमी इस समारोह में रह गई थी वह थी एक ऑडिटोरियम का निर्माण। उसका निर्माण आर्य जगत् के भामाशाह निरन्तर अपनी दान सरिता के प्रवाह में अनेकानेक संस्थाओं के योग क्षेम का आधार बने, महाशय धर्मपाल जी अपने उदार सात्विक दान से कराया जिसका नाम रखा गया है– माता लीलावन्ती सभागार।

न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष श्री अशोक आर्य ने बताया कि आज पूज्य स्वामी तत्त्वबोध जी कि दूसरे सत्यार्थप्रकाश के मानक संस्करण का प्रकाशन किया जाए। इसकी पूर्ति आर्य जगत् के वन्दनीय विद्वानों जिनमें डॉ. विशुद्धानन्द जी मिश्र, डॉ. रघुवीर वेदालंकार, डॉ. भवानी लाल भारतीय, आरदणीय श्री वेदप्रिय शास्त्री, स्मृति–शेष स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती, आचार्य सुदर्शन देव जी आदि का नाम उल्लेखनीय है, के पुरुषार्थ व न्यास के संरक्षक और पाताल देश में विराजकर भी सदैव न्यास के योगक्षेम की चिन्ता रखकर उसे प्रकाशन भी अतिशीघ्र संभव होने जा रहा है।

– अशोक आर्य, कार्यकारी अध्यक्ष

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

गुरु–शिष्य के प्रथम मिलन के 150वें वर्ष पर

6, 7, 8 नवम्बर, 2009 : मथुरा

उद्घाटन : 6 नवम्बर, 2009 प्रात: 10 बजे

मुख्य अतिथि : महामहिम राष्ट्रपति प्रतिभा देवीसिंह पाटील

19वीं सदी के महान् सुधारक महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्म गुजरात के टंकारा ग्राम में हुआ। विरक्ति होने पर घर परित्याग के बाद निरन्तर 13 वर्षों तक भारतवर्ष के विभिन्न दुर्गम तीर्थस्थलों में भ्रमण करते रहे, परन्तु सच्चे शिव के दर्शन करवाने वाला योग्य गुरु नहीं मिला। अन्त में 4 नवम्बर बुधवार (कार्तिक शुक्ल 2) सन् 1860 को स्वामी दयानन्द सरस्वती ने पावन नगरी मथुरा में वेद और व्याकरण के प्रकाण्ड विद्वान् प्रज्ञाचक्षु दण्डी स्वामी गुरु विरजानन्द सरस्वती की कुटिया का द्वार खटखटाया और श्रीचरणों में रहकर शिक्षा–दीक्षा प्राप्त की।

मथुरा में महान् गुरु और महान् शिष्य के प्रथम मिलन का 150वां वर्ष आरम्भ हो रहा है। आर्यजगत् के लिए यह गौरवशाली, प्रेरणादायक वर्ष है। आर्यों ने इस अवसर पर 6, 7, 8 नवम्बर, 2009 को मथुरा में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन करने का निर्णय किया है। 8 नवम्बर को महासम्मेलन की अध्यक्षता स्वामी रामदेव जी करेंगे। **आर्यजन अभी से तैयारियां आरम्भ करें और अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर प्रथम मिलन के 150वें वर्ष को एक यादगार के रूप में अपने हृदयों में अंकित करें।**

दिल्ली से जाने के लिए विशेष व्यवस्थाएं की जाएंगी। आर्यजन अधिकाधिक संख्या में सम्मिलित होने के लिए अभी से तैयारियां आरम्भ करें।

आयोजक :– गुरु विरजानन्द ट्रस्ट, वेद मन्दिर, मसानी चौक, मथुरा (उ.प्र.)
Email : virjanandtrust@yahoo.in, virjanandtrust@gmail.com

25वें निर्वाण वर्ष के उपलक्ष्य में

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य सम्मेलन की तिथियों में परिवर्तन

पूर्व घोषित तिथियों के स्थान पर अब यह सम्मेलन **4, 5, 6 दिसम्बर, 2009** को सम्पन्न होगा।

आर्यजन कृपया तिथियां नोट कर लें।

– दयासागर, प्रधान — दीनानाथ वर्मा, मन्त्री

श्री भारतभूषण आर्य (त्रिपाठी) आर्य प्रतिनिधि सभा झारखण्ड के प्रधान निर्वाचित

आर्य प्रतिनिधि सभा झारखण्ड अन्तरंग सभा दिनांक 6 सितम्बर, 2009 को आर्यसमाज के नियमो–उपनियमों के अनुसार सभा प्रधान श्री लक्ष्मण यादव जी के मृत्यु हो जाने के कारण कार्यकारी प्रधान श्री भारतभूषण आर्य (त्रिपाठी) को प्रधान मनोनीत किया गया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार की ओर से उन्हें हार्दिक शुभकामनाएं।

अब बरेली, शाहजहांपुर, बदायूं, पीलीभीत, बहेड़ी में
महर्षि दयानन्द सरस्वती (कॉमिक्स)
उत्तर प्रदेश के उपरोक्त स्थानों से खरीदने के लिए सम्पर्क करें –
ब्र. लेखराम आर्य, मो. 09568884778

महाराष्ट्र प्रान्त की आर्यसमाजें/संस्थाएं
महर्षि दयानन्द सरस्वती (कॉमिक्स)
खरीदने एवं इनामी प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए आर्यसमाज परली बैजनाथ, जिला बीड़ (महाराष्ट्र) से सम्पर्क करें।

दर्शन योग महाविद्यालय में प्रवेश आरम्भ

18 वर्ष से अधिक अवस्था वाले ब्रह्मचारी जिनकी न्यूनतम योग्यता व्याकरणाचार्य, शास्त्री या स्नातक हो और जो दर्शन शास्त्र, ध्यानयोग, वैराग्य, निष्कामता, अध्यात्म आदि के द्वारा स्वयं को जीवन निर्माण तथा समाज राष्ट्र की सेवा के इच्छुक हो वे अपना आवेदन पत्र नाम, आयु, शिक्षा, अनुभव, सामाजिक कार्य आदि सहित शीघ्र ही भिजवावें। विद्यालय में भोजन, आवास, वस्त्र, घी, दूध, फल, पुस्तक, चिकित्सा इत्यादि सभी वस्तुएँ निःशुल्क प्राप्त कराई जाती है। योग, सांख्य, वैशेषिक, न्याय एवं वेदांत दर्शन तथा ग्यारह उपनिषद और वेद के चुने हुए अध्यायों का अध्यापन कराया जाता है। प्रतिदिन विवेक, वैराग्य, अभ्यास, ईश्वर– प्रणिधान, मनोनियन्त्रण, ध्यान, समाधि तथा स्वस्वामि–सम्बन्ध (ममत्व) को हटाना, इत्यादि आध्यात्मिक सूक्ष्म विषयों पर भी विस्तार से विवेचन किया जाता है। पत्राचार हेतु पता :–

दर्शन योग महाविद्यालय, आर्य वन, रोजड़, पत्रा–सागपुर, साबरकांठा, गुजरात– 383307 दूरभाष (02770) 257224, 287417, 291496

निर्वाचन समाचार

दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मंडल

प्रधान	: श्री जितेन्द्र कुमार डाबर
मन्त्री	: श्री चतर सिंह नागर
कोषाध्यक्ष	: श्री ओमवीर सिंह

आर्यसमाज पश्चिमपुरी नई दिल्ली– 110063

प्रधान	:श्री हरिचन्द डुडेजा
मन्त्री	:श्री सुभाष गंधीर
कोषाध्यक्ष	:श्री प्रियदर्शन

आर्यसमाज दयानन्द विहार, दिल्ली– 110092

प्रधान	:डॉ. वीरेन्द्र रुस्तगी
मन्त्री	:श्री ईश नारंग
कोषाध्यक्ष	:श्रीमती आशा मेहता

आर्यसमाज मानसरोवर पार्क शाहदरा, दिल्ली–110032

प्रधान	:श्री जगदीश प्रसाद शर्मा
मन्त्री	:श्री स्वस्तियति
कोषाध्यक्ष	:श्री दीपचन्द्र गुप्ता

आर्यसमाज भरुआ, समेरपुर जिला – हमीरपुर (उ0 प्र0)

प्रधान	:श्री अनिल आर्य
मन्त्री	:श्री राकेश कुमार गुप्ता
कोषाध्यक्ष	:श्री प्रेम कुमार

आर्यसमाज कर्णपुर देहरादून (उत्तराखण्ड)

प्रधान	:श्री डॉ. आर. एन. सरल
मन्त्री	:श्री खुशहाल सिंह स्नेही
कोषाध्यक्ष	:श्री सागरमल गुप्ता

आर्यसमाज नानापेठ, पुणे – 411002 (महाराष्ट्र)

प्रधान	:श्रीमती प्रतिभा गुप्ता
मन्त्री	:श्रीमती सुदर्शन मनचन्दा
कोषाध्यक्ष	:श्री कंवल साहनी

आर्यसमाज भट्टीपुरा बाड़ा बाजार, कालपी (उ.प्र.)

प्रधान	:श्री ओंकार नाथ आर्य
मन्त्री	:श्री अखिल जेटली
कोषाध्यक्ष	:श्री चन्द्रशेखर आर्य

आर्यसमाज तेघरा, जिला – बेगूसराय (बिहार)

प्रधान	:श्री उमाशंकर आर्य
मन्त्री	:श्री राजकुमार आर्य
कोषाध्यक्ष	:श्री सज्जन कुमार आर्य

आर्यसमाज रीवा (म.प्र.) का
श्रावणी वेद प्रचार सम्पन्न

आर्यसमाज रीवा में श्रावणी उपाकर्म के अन्तर्गत वेद प्रचार सप्ताह, उत्साह के साथ 5 से 14 अगस्त, 09 तक मनाया गया इसमें अथर्ववेद पारायण यज्ञ किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा पंडित गिरीश पालीवाल, साहित्याचार्य थे। प्रातः व सायं व्याख्यान व प्रवचन श्री जयराम लाल आर्य तथा श्री श्रीराम सिंह आर्य और भजनोपदेश श्री नन्द कुमार आर्य द्वारा किया गया। वेद प्रचार सप्ताह के प्रथम दिवस 6 बालकों का यज्ञोपवीत संस्कार कराया गया। दिनांक 13–8–09 को यज्ञोपरान्त वृक्षारोपण श्रीमती श्यामा शुक्ला, श्री सुशील कुमार वर्मा एवं श्री सुनीलदत्त पाण्डेय द्वारा किया गया। – *सुनीलदत्त पाण्डेय, मन्त्री*

आर्यसमाज दरियागंज, नई दिल्ली के तत्त्वाधान में
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी सम्पन्न

आर्यसमाज दरियागंज, नई दिल्ली –110002 के तत्त्वाधान में श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर्व बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाया गया जिनमें सैकड़ों आर्य नर–नारियों ने उत्साह से भाग लेकर आध्यात्मिक आनन्द का लाभ उठाया।

इस अवसर पर आर्य समाज के प्रधान श्री महेन्द्र सिंह चौहान ने उपस्थित आर्य जनसमूह को योगीराज श्री कृष्ण के समाज के प्रति किए गए कार्यों से आध्यात्मिक लाभ उठाने की प्रेरणा दी। श्रीमती चन्द्रकांता चौहान व श्रीमती वीना पुरी आदि ने योगीराज श्रीकृष्ण से सम्बन्धित भक्ति गीतों को प्रस्तुत किया जिसका श्रवण कर समस्त जन समूह भाव विभोर हो उठा। इस अवसर पर आर्य अनाथालय – आर्य बाल गृह के 95 बच्चों को कॉपी पेंसिल वितरित की गई। – *महेन्द्र सिंह चौहान, प्रधान*

महर्षि दयानन्द सरस्वती

जीवन चरित्र, घटनाओं तथा ग्रन्थों की जानकारी के लिए लॉगऑन करें

www.swamidayanand.com

शोक समाचार

श्रीमती सुशीलावती खुराना दिवंगत

उत्तरी दिल्ली वेद प्रचार मंडल के प्रधान के रूप में वर्षों तक कार्य करते रहे आर्यनेता स्व. महाशय रामविलास खुराना जी की धर्मपत्नी श्रीमती सुशीलावती खुराना का दिनांक 28 अगस्त, 09 को निधन हो गया। श्रीमती खुराना आर्यसमाज गुजरांवाला, व सत्संग भवन की संस्थापिका थीं। वे एक समर्पित समाज सेविका थी, जिन्होंने पारिवारिक जिम्मेदारियां निभाते हुए समाज व राष्ट्र सेवा में प्रवृत्त रहीं।

उनकी स्मृति में श्रद्धांजलि सभा का अयोजन किया गया जिसमें महाशय धर्मपाल, आर्य तपस्वी सुखदेव, आचार्य अखिलेश्वर, आचार्य प्रेमपाल शास्त्री, श्री विनय आर्य (महामंत्री दिल्ली प्रतिनिधि सभा), श्री वीरेन्द्र आर्य (संचालक आर्य वीर दल, दिल्ली प्रदेश) श्री महावीर बत्रा श्री रमेश डाबर, श्री गोपाल आर्य, श्री मनवीर सिंह राणा, विधायक करण सिंह तंवर श्री राज खुराना (पार्षद) पत्रकार चन्द्रमोहन आर्य आदि ने पहुंचकर अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

श्री अशोक सहदेव को मातृशोक

आर्यसमाज के हनुमान रोड के प्रतिष्ठित सदस्य श्री अशोक सहदेव की पूज्या माताजी एवं आर्य पब्लिक स्कूल राजाबाजार के संस्थापक स्व. श्री रतनलाल सदेव जी की धर्मपत्नी श्रीमती राजरानी सहदेव का दिनांक 9 सितम्बर,09 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार लोधी रोड श्मशानघाट पर आर्यसमाज हनुमान रोड के धर्माचार्य डॉ. कर्णदेव शास्त्री एवं आर्यसमाज डिफेंस कालोनी के पुरोहित पं. रामचन्द्र ने सम्पन्न कराया। उनकी स्मृति में श्रद्धांजलि सभा 11 सितम्बर को न्यू फ्रैंडस कालोनी स्थित माता के मन्दिर में आयोजित हुई जिसमें दिल्ली सभा के प्रधान ब्र. राजसिंह आर्य, आर्यसमाज हनुमानरोड के प्रधान अरुण प्रकाश आर्य एवं उप प्रधान श्री सुभाष गण्डोत्रा उपस्थित थे।

आर्य प्रतिनिधि सभा झारखण्ड के प्रधान
श्री लक्ष्मण यादव का निधन

आर्य प्रतिनिधि सभा झारखण्ड के प्रधान एवं संयुक्त बिहार राज्यआर्य प्रतिनिधि सभा के कर्मठ कार्यकर्ता, अधिकारी सदस्य श्री लक्ष्मण यादव का गत निधन हो गया। स्व. श्री यादव जी एक कर्त्तव्यनिष्ठ, सेवाभावी व्यक्तित्व थे।

स्वतन्त्रता सेनानी पं. सत्यानन्द शास्त्री का निधन

सन् 1916 में जन्में श्री सत्यानन्द शास्त्री का गत 17 अगस्त, 2009 को 94 वर्ष की अवस्था निधन हो गया। वे एक कुशल लेखक थे। उन्होंने कई ग्रन्थों की रचना तथा टीकाएं लिखीं। 1934 में इण्टर की परीक्षा पास करने के बाद उन्हों ने कॉलेज की पढ़ाई छोड़ कर संस्कृत भाषा का अध्ययन स्वामी वेदानन्द तीर्थ के सन्निध्य में किया। 1939 में वे हैदराबाद सत्याग्रह में शामिल हुए और 1939 में महाशय कृष्ण के साथ औरंगाबाद में गिरफ्तार हुए। 1940 में जेल से छूटने के बाद उन्होंने कॉलेज में दाखिला लिया और 1942 में बी0ए0, 1943 में शास्त्री की परीक्षा तथा 1944 में एम.ए.डी.ए. वी. कॉलेज लाहौर से पास किया। उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में सक्रियता से भाग लिया और ब्रह्म महाविद्यालय लाहौर को पुनः आरम्भ किया। 1944–45 में उसके प्रिन्सीपल रहे। 1945 के मध्यसे 1946 के अन्त तक वे विरजानन्द वैदिक, इस्टीच्यूट, गुरुदत्त भवन, लाहौर में प्रिन्टिंग के इन्चार्ज रहे। विभाजन के बाद वे दिल्ली आ गए। 1949 में उन्होंने कान्स्टीच्यूएंट एसम्बली के सैक्रेटेरियर को ज्वाइन किया जहां उन्होंने भारत के संविधान को हिन्दी में अनुवाद करने वाली समिति का सहयोग दिया। फिर उन्होंने राज्य सभा सैक्रेटेरियट ज्वाइन किया जहां से वे 1974 को सेवा निवृत्त हुए। 1999 में वे अमेरिका गए और वहां अपने पुत्र अरुण तलवार के साथ रहे।

श्री बंसीलाल आर्य का निधन

आर्यसमाज कोसाणा जिला जोधपुर के प्रधान श्री बंसीलाल आर्य का दिनांक 15 अगस्त, 09 को 88 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनका अन्त्येष्टि संस्कार पं. केशवदेव आर्य ने वैदिक रीतिनुसार कराया। आप गत 50 वर्षों परिवार में दैनिक यज्ञ कर रहे थे। आपका अपना भरा पूरा परिवार वैदिक सिद्धान्तों पर चलता है जिसका श्रेय आप को ही है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे उपरोक्त दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक–संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करें। –सम्पादक

आर्य समाज ने स्वाइन फ्लू से बचाव का काढ़ा पिलाया

आर्य समाज जिला सभा कोटा द्वारा 26 अगस्त 09 को विज्ञान नगर, सेक्टर –4 में स्वाईन फ्लू से बचाव हेतु औषधीय काढ़ा पिलाया गया।

आर्यसमाज जिला आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान अर्जुन देव चड्ढा ने बताया कि योग ऋषि स्वामी रामदेव जी द्वारा निर्देशित स्वाईन फ्लू काढ़ा, जो गिलोय, तुलसी, कालीमिर्च, मिश्री, नीम, व तुलसी की पत्तियों व हल्दी को उबालकर तैयार किया गया, लोगों को पिलाया। श्री चड्ढा ने बताया कि यह औषधीय काढ़ा पीने से स्वाइन फ्लू से बचने में शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ जाती है।

आर्य समाज के विद्वान डॉ. के. एल. दिवाकर ने बताया कि यह औषधीय काढ़ा मलेरिया, डेंगू व मौसमी ज्वर के रोकथाम में बहुत लाभकारी है।

– अर्जुन देव चड्ढा, जिला प्रधान

वेद प्रचार मंडल पश्चिमी दिल्ली
के तत्त्वावधान में

ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका प्रवचन माला

वैदिक प्रवक्ताः आचार्य इन्द्रदेव जी

17 से 19 सितम्बर, 2009
आर्यसमाज बाहरी रिंग रोड विकासपुरी
भजनःरात्रि 8 से 8.15 बजे
प्रवचनः रात्रि 8.15 से 9.30 बजे
समापनः 20 सितम्बर, 2009
सम्पर्क : ललित चौधरी (9818371375)

24 से 26 सितम्बर, 2009
आर्यसमाज जनकपुरी ए ब्लॉक
यज्ञ–भजनःसायं 6.30–7.15 बजे
प्रवचन–शंका समाधानः सायं 7.15
समापनः 27 सितम्बर, 2009
सम्पर्कः वीरेन्द्र सरदाना (9911140756)

19 से 26 सितम्बर, 2009
आर्यसमाज कर्मपुरा, नई दिल्ली
पारिवारिक वेद प्रचार कार्यक्रम
समयः दोपहर 3 से 5 बजे
पार्क में प्रवचनः 21 से 26 सितम्बर
समयः प्रातः 7 से 7.45 बजे
सम्पर्कः यशपतराय गुप्ता (9873072275)

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में उपरोक्त कार्यक्रमों मे पहुँचकर धर्मलाभ अर्जित करें। *–सुरेन्द्र बुद्धिराज, प्रधान*
वीरेन्द्र सरदाना, मन्त्री
भूषण लाल वर्मा, संयोजक

आर्यसमाज, शमसाबाद (आगरा)

95 वां वार्षिकोत्सव

1, 2, 3 अक्टूबर, 2009

में आप सब अधिकाधिक संख्या में पहुँचकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाएं।

– विवेकानन्द गुप्ता, प्रधान
सत्यदेव गुप्ता, मन्त्री

आर्य समाज ब्रह्मपुरी दिल्ली में श्रावणी उपाकर्म सम्पन्न

आर्य समाज ब्रह्मपुरी में श्रावणी उपाकर्म (वेद पाठ) एवं श्री कृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव 11 से 14 अगस्त, 09 तक धूम–धाम से मनाया गया जिसमें आचार्य ब्रह्मदेव जी वेदालंकार जी के प्रवचन एवं डा0 ओम प्रकाश जी (एटा वालों के भजन का क्रार्यक्रम हुआ।

– अनिल खण्डन आर्य, मंत्री

वृष्टि यज्ञ से वर्षा को निमंत्रण

निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु जैसे हजारो मंत्रों से 9 अगस्त 09 को प्रातः आर्य समाज विज्ञान नगर, कोटा में सैकड़ों लोगों ने वृष्टि यज्ञ में आहुतियां दी। याज्ञिकों ने तीन घंटे तक ऋग्वेद एवम् अथर्ववेद के मन्त्रों का जाप करते हुए ईश्वर से प्रार्थना की है – प्रभु! चारों दिशाओं से उमड़ घुमड़ कर बादल बरसा दो, घनघोर घटाएं बरसें, बिजली चमकती रहे और सुखदायी वायु बहती रहे ताकि सृष्टि हरी–भरी रहे।

वृष्टि यज्ञ सफलता के साथ सम्पन्न

मेवात के ग्राम बीसरू तथा फिरोजपुर झिरका में आर्य वेद प्रचार मंडल मेवात (हरियाणा) के तत्त्वावधान में वृष्टि यज्ञ का आयोजन किया गया, जो पूरी तरह सफल रहा। यज्ञ के फलस्वरूप समस्त क्षेत्र में भारी वर्षा हुई। इस अवसर पर प्रसिद्ध भजनोपदेशक पं. नन्दलाल निर्भय सिद्धांताचार्य बहीन, जिला पलवल (हरियाणा) श्री नरेश दत्त आर्य बिजनौर (उत्तर प्रदेश) श्री चतर सिंह आर्य भानपुर (पलवल) के प्रवचन व भजनोपदेशो को क्षेत्रीय जनता ने विशेषरूप से पसन्द किया। आर्य समाज की सर्वत्र प्रशंसा की जा रही है।

आर्यसमाज गोविन्दपुरी, नई दिल्ली का

वेद प्रचार सप्ताह सम्पन्न

आर्यसमाज गोविन्दपुरी, नई दिल्ली–19 का वेद प्रचार सप्ताह सोमवार 31 अगस्त से 6 सितम्बर, 2009 तक हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर प्रतिदिन के कार्यक्रम के उपरान्त समस्त उपस्थित आर्यजनों के लिए भोजन की व्यवस्था की गई।

पूर्णाहुति एवं समापन समारोह के अवसर पर आर्य सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मेलन का विषय था – "अपराधों की रोकथाम में संगठन का महत्व।" आर्यजनों ने भारी संख्या में पहुंचकर समारोह को सफल बनाया।

– सोमदेव मल्होत्रा, प्रधान
सुरेशचन्द्र गुप्ता, मन्त्री

दिल्ली स्थित समस्त आर्यसमाज मन्दिरों के धर्माचार्यों के लिए आवश्यक सूचना

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के द्वारा 16 अगस्त 2009 को आयोजित दिल्ली स्थित समस्त धर्माचार्य / पुरोहितों की बैठक में उपस्थित सभी माननीय धर्माचार्यों को सूचित किया गया था कि दिल्ली सभा द्वारा सभी धर्माचार्यों को प्रामाणिक व उपयोगी पहचानपत्र दिये जायेंगे और सभी उपस्थित महानुभावों को तत्सम्बन्धी विवरण पत्र भी वितरित किये गये थे। अब कई धर्माचार्य महानुभावों के विवरण पत्र सभा कार्यालय में प्राप्त होने लगे हैं व पहचानपत्र की प्रक्रिया आगे बढ़ रही है।

जो धर्माचार्य उक्त बैठक में सम्मिलित नहीं थे अथवा जिन्होंने अभी तक अपना विवरण नहीं भेजा उनसे निवेदन है कि वे शीघ्रातिशीघ्र सभाकार्यालय से विवरण पत्र प्राप्त करें और उसे यथावत् भरकर अपने रंगीन फोटो सहित सभा कार्यालय में जमा करायें। **विवरण पत्र प्राप्त होने की अन्तिम तिथि 30 सितंबर 2009 है। इसके बाद प्राप्त होने वाले विवरण पत्र पर कार्य नहीं किया जा सकेगा।** अतः शीघ्रता करें।

अधिक जानकारी के लिये आचार्य हरि प्रसाद जी (9871516470) से सम्पर्क करें। *– विनय आर्य, महामन्त्री, 9958174441*

आर्यसमाज वडोदरा (गुजरात) का

श्रावणी पर्व सम्पन्न

आर्यसमाज वडोदरा, 22 विश्राम बाग, वडोदरा द्वारा शहर के विभिन्न स्थानों पर संयोजन करते हुए वेद सप्ताह बड़ी धूमधाम से मनाया गया जिसमें छात्रों की वक्तृत्व प्रतियोगिता आयोजित कर विजेताओं को पुरूस्कृत किया गया। मुख्य अतिथि डॉ. हरीश भाई व्यास ने समारोह की अध्यक्षता कर आशीर्वचन दिये। यज्ञ, यज्ञोपवीत, नवीनीकरण, रक्षाबंधन समरोह का आयोजन 'आर्य महिला सत्संग मंडल' द्वारा आयोजित किया गया।

– राजेन्द्र पाल वर्मा 'इन्द्र', उपमन्त्री

आर्यसमाज सम्भाजी नगर, औरंगाबाद

श्रावणी वेद प्रचार सम्पन्न

आर्यसमाज संभाजी नगर जिला औरंगाबाद (महाराष्ट्र) में श्रावणी वेद प्रचार 14 से 15 अगस्त, 09 को महर्षि दयानन्द भवन में संपन्न हुआ। समापन समारोह में मतदार संघ के सांसद श्री चंद्रकांत खैरे तथा महापौर विजयाताई रहाटकर का स्वागत आर्यसमाज की ओर से किया गया। इस प्रसंग पर माननीय सांसद श्री चंद्रकांत खैर ने यह कहा कि आर्यसमाज ने सनातन हिन्दू धर्म में आयी हुई कुप्रथाओं को समाप्त करने का काम किया और कर रहा है। *– दयाराम बसैये बंधु, मन्त्री*

–: खेद व्यक्त :–

पाठकों की सूचनार्थ है कि सार्वदेशिक सभा शताब्दी अधिवेशन एवं महासम्मेलन की तैयारियों के कारण साप्ताहिक आर्यसन्देश का गत दो अंक दिनांक 23 अगस्त से 30 अगस्त एवं 31 अगस्त से 6 सितम्बर, 2009 प्रकाशित नहीं हो सके। पाठकों को होने वाली असुविधा के लिए सम्पादक मंडल खेद व्यक्त करता है। *– सम्पादक*

आर्यसमाज सान्ताक्रुज मुम्बई का

वेद प्रचार सप्ताह सम्पन्न

आर्यसमाज सान्ताक्रुज (प.) मुम्बई द्वारा गुरुवार 6 अगस्त से रविवार 9 अगस्त, 2009 तक आर्य समाज सान्ताक्रुज में वेद प्रचार सप्ताह उत्साहपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर प्रतिदिन "चतुर्वेद शतक पारायण यज्ञ" तथा भजन, प्रवचन का आयोजन किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा वैदिक विद्वान् आचार्य देवव्रत शास्त्री (गुरुकुल कुरुक्षेत्र) थे।

रविवार 9 अगस्त को चार दिवसीय चतुर्वेद शतक पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति हुई। प्रातःराश के पश्चात् 10.00 बजे से कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ। इसी अवसर पर स्व. ओंकारनाथ आर्य की पुण्यतिथि के अवसर उन्हें स्मरण किया गया।

आर्यसमाज सान्ताक्रुज के प्रधान श्री लालचन्द्र आर्य ने सभी उपस्थित विद्वानों, अतिथियों, श्रोताओं, एवं कार्यकर्त्ताओं तथा सहयोगियों एवं दानदाताओं का हार्दिक आभार व्यक्त करते हुए धन्यवाद दिया। शान्तिपाठ एवं जयघोष के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। *– संगीत आर्य, महामन्त्री*

आर्यसमाज सूरजमल विहार दिल्ली में

गायत्री महायज्ञ का आयोजन

आर्य समाज सूरजमल विहार, दिल्ली द्वारा शनिवार 19 सितम्बर से रविवार 27 सितम्बर, 09 तक नव–रात्र के पुनीत अवसर पर 51000 गायत्री महायज्ञ का आयोजन किया गया है। यज्ञ के ब्रह्म श्री राजू वैज्ञानिक जी होंगे। यज्ञ समय प्रातः 7. 30 बजे से 9 बजे तक होगा। रविवार 27 सितम्बर को यज्ञ की पूर्णाहुति होगी।

सभी आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पधारकर पुण्यलाभ के भागी बनें।

– अशोक गुप्ता, प्रधान

आर्य समाज कीर्तिनगर नई दिल्ली–110015 का

श्रावणी उपाकर्म व कृष्णजन्माष्टमी पर्व सम्पन्न

ये पर्व 27–30 अगस्त को प्रभात फेरी से शुरु हुआ जोकि कीर्तिनगर की विभिन्न सड़कों पर प्रभु भजन गाते हुए व कार्यक्रम की सूचना देते हुए, पत्रक बांटते हुए निकाली गयी।

31 अगस्त से 5 सितम्बर 2009 तक प्रातःकालीन यज्ञ–भजन–प्रवचन छः विभिन्न पार्कों में विभिन्न परिवारों द्वारा आयोजित किए गए, जिनमें 110 से 150 सदस्यों तक की संख्या रही तथा 24 दम्पति व 20 स्त्री/पुरुष (कुल 68) यजमान बने। यज्ञ की ब्रह्मा डॉ. अन्नपूर्णा (प्राचार्या, द्रोणस्थली आर्ष कन्या गुरुकुल देहरादून) थीं। वेदपाठ व भजन गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियों द्वारा सुनाए गए। इन्हीं तिथियों में आर्यसमाज के प्रथम तल पर सायंकालीन भजन–प्रवचन के कार्यक्रम में भी बहुत ही मधुर भजन ब्रह्मचारिणियों सुनाए। तत्पश्चात डॉ. अन्नपूर्णा जी के वेद–ज्ञान पर आधारित प्रवचन हुए। विभिन्न परिवारों के सहयोग से सभी धर्म प्रेमियों ने, घर की चिन्ता छोड़ के, ऋषि लंगर भी किया।

इसी कारण सदस्यों की संख्या 170 से बढ़ते हुए सप्ताहंत तक 250 तक हो गई।

6 सितम्बर 2009 को प्रातः पूर्णाहुति के अवसर 15 यज्ञ कुण्ड यजमानों ने पूर्णाहुति द्वारा इस पुनीत कर्म को सम्पन्न किया। सभी यजमानों ने व्यवस्थित ढ़ंग से श्रद्धापूर्वक ब्रह्मा से आशीर्वाद लिया। तत्पश्चात ब्रह्मचारिणियों ने प्रेरक भजन प्रस्तुत किए। डॉ. महेश विद्यालंकार जी ने वर्तमान मानव जीवन को सहज व कल्याणकारी बनाने हेतु तेजस्वी व प्रेरणादायक सम्बोधन दिया। दिल्ली सभा के प्रधान ब्र. राजसिंह आर्य वउप प्रधान श्री सोमदत्त महाजन जी के सम्बोधन के उपरान्त डॉ. अन्नपूर्णा जी ने बड़ा ही मार्मिक, उद्‌बोधन दिया। गत वर्ष की तरह, इस बार श्रीमती यमुना देवी टागरा, श्री राजकुमार आनन्द तथा श्री ऋषि राज तनेजा जी को उनके सहयोग, निष्काम सेवाओं तथा आर्यसमाज को दिये गये सहयोग के लिए अभिनन्दन पत्र द्वारा सम्मानित किया गया। अन्त में गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियों द्वारा बड़े ही रोचक "संवाद" कार्यक्रम ने सभी सदस्यों का (लगभग 500) मन मोह लिया। प्रधान जी द्वारा सभी श्रोताओं, दानदाताओं व कार्यकर्त्ताओं के धन्यवाद, शांतिपाठ व ऋषि लंगर के पश्चात् आर्य सम्मेलन संपन्न हुआ।

– ओम प्रकाश आर्य, प्रधान
सतीश चड्ढा, मन्त्री

पूर्णाहुति के अवसर पर सम्पन्न हुए यज्ञ का बृहद दृश्य।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के भूतपूर्व प्रधान एवं पूर्व केन्द्रीय रक्षा राज्यमन्त्री

प्रो. शेर सिंह का निधन

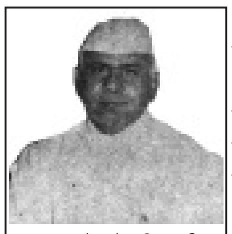

स्व. प्रो. शेर सिंह जी

आर्य समाज के आधार स्तम्भ हरियाणा के गौरवमय पुत्र, पंजाब में हिन्दी आन्दोलन के पुरोधा, आर्य समाज के सिद्धान्तों की स्थापना के लिये सतत् संघर्षरत 92 वर्षीय प्रो. शेर सिंह के निधन का समाचार सुनकर आर्य जगत एवं हरियाणा में विषाद के बादल छा गये।

उनकी अन्त्येष्टि उनके पैतृक गांव बाघपुर में हुई जिसमें हरियाणा के मुख्यमंत्री श्री भूपेन्द्र सिंह हुड्डा, हरियाणा विधानसभा के अध्यक्ष डॉ. रघुवीर सिंह कादियान हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री श्री ओमप्रकाश चौटाला, पूर्व केन्द्रीय मंत्री श्री सोमपाल शास्त्री, चौ. मित्रसेन आर्य, स्वामी प्रणवानन्द, आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान आचार्य बलदेव, मन्त्री आचार्य विजयपाल, आचार्य यशपाल, चौ. उदयसिंह मान आदि अनेक नेता उपस्थित थे।

वे एक आदर्श राजनीतिज्ञ थे और पंजाब हरियाणा की प्रान्तीय सरकारों एवं केन्द्रीय सरकार में मंत्री पद पर रहते हुए उन्होंने आर्य समाज के गौरव को बढ़ाया। प्रो. शेरसिंह का जन्म 11 अगस्त 1917 को झज्जर जिले के ग्राम बाघपुर में हुआ था। उनके पिता चौ. शिशराम आर्य कट्टर आर्य समाजी थे और उन्होंने अपना सारा जीवन आर्य समाज को समर्पित किया हुआ था। वे जातिवाद के प्रबल विरोधी थे। उन्होंने अपने जिले में कुंओं पर हरिजनों को पानी लेने के अधिकार के लिये अन्दोलन चलाया और अन्तरजातीय विवाह तथा अछूतोद्धार के कारण उनका परिवार सामाजिक बहिष्कार का शिकार रहा।

प्रो. शेर सिंह को आर्यसमाज के उदात्त विचार विरासत में मिले थे। और उन विचारों पर वे जीवनभर दृढ़ रहें।

सन् 1952 में वे पंजाब विधानसभा में विधायक बन कर पहुंचे। सन 1957 में वे पुनः पंजाब विधानसभा को विधायक बने और मंत्री बने। 1967 में हरियाणा को पंजाब से पृथक करने के लिये आन्दोलन चला, वे इस आन्दोलन के सर्वोच्च नेता थे। 1977 में जनता दल की सरकार में प्रधानमंत्री श्री मुरारजी देसाई ने उन्हें सूचना एवं प्रसारणमंत्री बनाया। वे आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के 15 वर्ष तक प्रधान रहे। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के 3 वर्ष तक कुलाधिपति रहे। प्रोफेसर साहब ने अपना शेष जीवन शराबबन्दी के लिये समर्पित कर दिया था और अखिल भारतीय नशाबन्दी की स्थापना की थी।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को सद्‌गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करें।

–सम्पादक

आर्यसमाज की समस्त आर्यसमाजों एवं आर्य संस्थाओं की ओर से

महर्षि दयानन्द सरस्वती का

126वां निर्वाण दिवस समारोह

शनिवार 17 अक्तूबर, 2009

यज्ञ : प्रातः 8.00 बजे श्रद्धांजलि सभा : मध्याह्न 1 बजे

स्थान : रामलीला मैदान (तुर्कमान गेट साइड) नई दिल्ली-2

आर्यजन अभी से तैयारियां आरम्भ करें और भारी संख्या में पधारकर महर्षि दयानन्द को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करें।

-: निवेदक :-

धर्मपाल आर्य, प्रधान — अरुण प्रकाश वर्मा, कोषाध्यक्ष — सुरेन्द्र रैली, महामन्त्री

आर्य केन्द्रीय सभा (दिल्ली राज्य) – 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से प्रस्तुत हैं

वर्ष 2010 के कैलेण्डर

बढ़िया 130ग्रा. आर्ट पेपर पर

20×30 एवं 16×30 इंच के आकारों में

मूल्य 850/-रु. एवं 750/-रुपये सैंकड़ा

आज ही अपने आर्डर बुक कराएं

नोट : केवल दीपावली तक ही आर्डर बुक किए जाएंगे। अपनी प्रतियां बुक कराने के लिए 50 प्रतिशत राशि अग्रिम भेजें। 250 से अधिक प्रतियां के आर्डर देने पर नाम से प्रकाशित करने की सुविधा उपलब्ध है।

-: सम्पर्क करें :-

व्यवस्थापक, साहित्य प्रकाशन विभाग

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.), 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-111001

दूरभाष : 011-23360150, 23365959 फैक्स : 011-23343737

❖ साप्ताहिक आर्य सन्देश ❖

14 सितम्बर, 2009 से 20 सितम्बर, 2009

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१

दिल्ली पोस्टल रजि.नं० डी.एल.(एन.डी.)-११/६०७१/२००९-२०११
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने की दिनांक १७/१८-०९-२००९
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं० यू०(सी०) १३९/२००९-११
आर. एन. नं. ३२३८७/७७

प्रतिष्ठा में,

विद्यार्थियों के लिए विशेष योजना

विद्यालयों के बच्चों को पढ़ाइए महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन चरित्र

आपके बच्चों को मिल सकते हैं

5,00,000 रु० से अधिक के इनाम

देशभर से भारी मांग के चलते प्रविष्टियां भेजने की अन्तिम तिथि में वृद्धि की गई है।

अब प्रविष्टियां भेजने की अन्तिम तिथि 17 अक्तूबर, 2009 है।

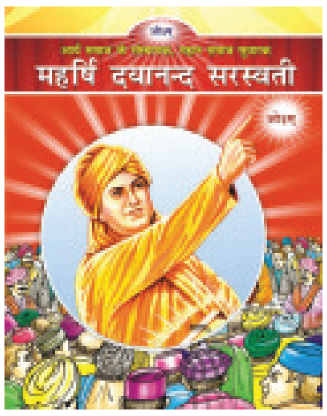

माता कमला आर्या स्मारक ट्रस्ट
की ओर से

महर्षि दयानन्द जीवनी
(कॉमिक्स) पर

अतिरिक्त पुरस्कार योजना

ड्रा की तिथि : 11 अक्तूबर, 09

केवल 30 सितम्बर, 09 तक प्राप्त प्रविष्टियों को ही इस अतिरिक्त पुरस्कार योजना में सम्मिलित किया जाएगा।

ड्रा के बाद इन प्रविष्टियों को मूल पुरस्कार योजना में सम्मिलित करने के लिए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय भेज दिया जाएगा। सभा में प्रविष्टियां भेजने की अन्तिम तिथि 17 अक्तूबर, 2009 है।

यदि आप अतिरिक्त पुरस्कार योजना में सम्मिलित होना चाहते हैं तो निम्न पते पर यथाशीघ्र अपनी प्रविटियां भेजें। भेजने का पता :-

माता कमला आर्या स्मारक ट्रस्ट,
डी-796, सरस्वती विहार,
दिल्ली-34

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें।
— भजन प्रकाश आर्य, अध्यक्ष
सम्पर्क :- 27017780,
9718194653

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र० राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए सार्वदेशिक प्रेस, 1488 पटौदी हाऊस, दरियागंज, नई दिल्ली-2 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान रोड नई दिल्ली-१; दूरभाष : २३३६०१५०; टैलीफैक्स २३३६५९५९; E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : ब्र० राजसिंह आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : सुशील महाजन सह व्यवस्थापक : डॉ० ओमप्रकाश भटनागर